₹ 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

सितम्बर 2011



- लोक-परलोक सुधारक हज़रत मुहम्मद (स॰)
  –हीरालाल कर्दम
- भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवाद : एक विवेचन
  –डॉ॰ मुहम्मद अहमद
- भयभीत कांग्रेस और लोकपाल
  –सुरेन्द्र चतुर्वेदी
- इस्लाम में मज़दूरों के अधिकार
  –डॉ॰ एम॰ए॰ रशीद

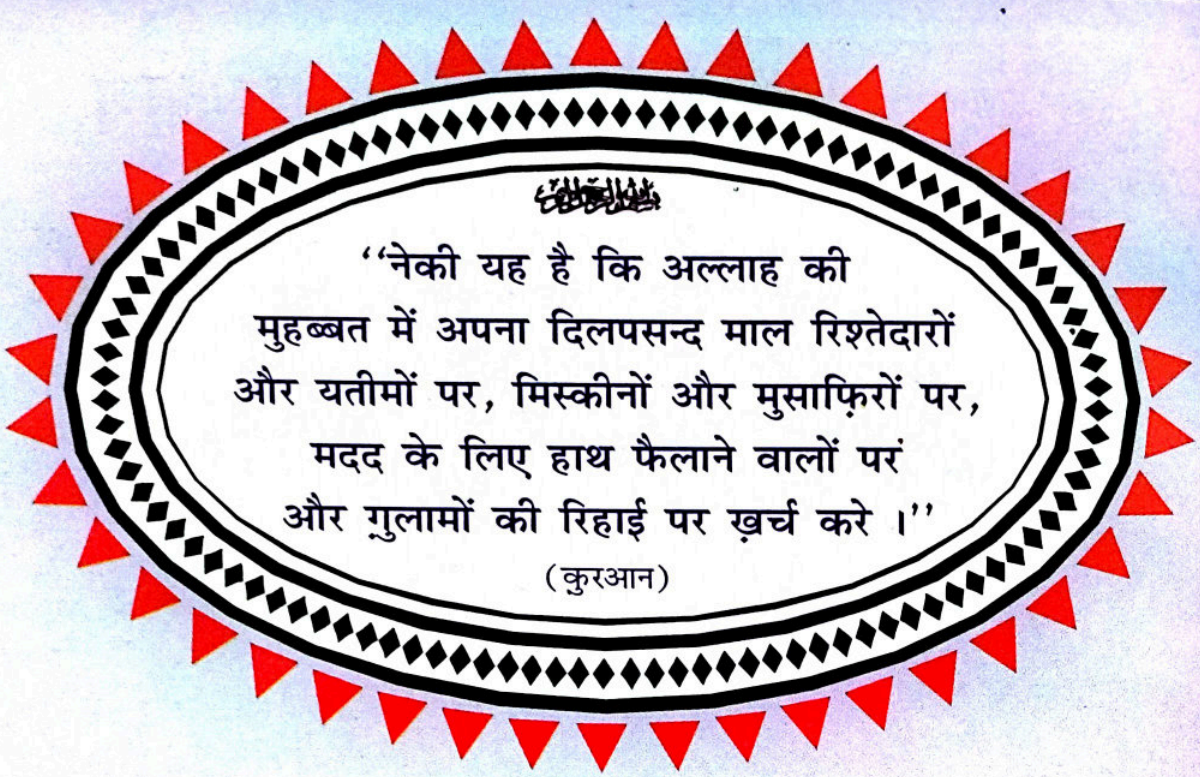

M/s SHAMA ENTERPRISES

- *Industrial Civil Works*
- *Trading in Metal Scrap/Steel*
- *Manoeaoture of Plastic Granuces*

Office: 3133 Aziz Manzil Chandrawaddo Fatorda Margao

Works : (Master Plast)

Plot 15/A, Sancoale Industrial Estate, Vasco

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 21 अंक 3 सितम्बर 2011

अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है । और जो कुछ तुम्हारे मन में है, यदि तुम उसे व्यक्त करो या छिपाओ, अल्लाह तुम से उसका हिसाब लेगा । फिर वह जिसे चाहे क्षमा कर दे और जिसे चाहे यातना दे ।

–क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

शायरों के, न किसी अह्ले-क़लम के हाथों
आप बदनाम हुए अपने सितम के हाथों

इसलिए राहज़नों से मैं बहुत नादिम[1] हूं
उनको ज़हमत जो हुई मेरे भरम के हाथों

हम तो समझे थे कि दुनिया को रुला डालेंगे
जग हंसाई हुई रूदादे-अलम[2] के हाथों

अपने कशकोल से सर फोड़ लें नादां अपना
वो जो बरबाद हुए दस्ते-करम[3] के हाथों

इतने आसूदा[4] कहां थे भला अब से पहले
बन गये हम तेरे फ़ैज़ाने-सितम[5] के हाथों

तब ख़याल आया कि मैं झूठ के बाज़ार में हूं
ज़िन्दगी बिक गयी जब क़ौलो-क़सम[6] के हाथों

हर सताया हुआ मिलता है लिपट कर मुझसे
शख़्सियत में ये कशिश आयी है ग़म के हाथों

जश्ने-गिरया[7] का ये आग़ाज़े-हसीं तो देखो
शम्एं पलकों पे जलीं शामे-अलम[8] के हाथों

सर-बकफ़[9] हम जो बढ़े दीन की नुसरत[10] को 'हफ़ीज़'
कुफ़्र[11] का फ़तवा लगा शैख़े-हरम[12] के हाथों ।

● हफ़ीज़ मेरठी

---

1. शर्मिन्दा 2. व्यथा-कथा 3. वरदहस्त, करम का हाथ 4. अघाये हुए, ख़ुशहाल, संतुष्ट 5. अत्याचारियों की कृपा, अत्याचारियों की मेहरबानी 6. वचन, क़सम 7. रुदनोत्सव, आंसू बहाने का जश्न 8. ग़म की संध्या 9. जान हथेली पर लेकर 10. विजय 11. अधर्म 12. धर्मगुरु ।



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
सुशीलता (हदीस मंजरी)		6
भ्रष्टाचार के सिंहासन पर लोकतंत्र ! (संपादकीय)		7
अंधविश्वासों पर ख़ामोशी क्यों ? (आपके पत्र)		8
काव्य रचना	–प्रमोद 'पुष्कर', यूसुफ़ 'राज़', यशपाल जैन 'आदर्श'	11
जहां के वास्ते एक आख़िरी निज़ाम आया	–माहिरुल क़ादिरी	13
लोक-परलोक के सुधारक : हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	–हीरालाल कर्दम	19
हज़रत ज़ैनब बिन्त अली रज़ि० (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	23
भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवाद : एक विवेचन	–डॉ० मुहम्मद अहमद	26-27
बाल अपराध की समस्या और उसका समाधान	–मुहम्मद निज़ामुद्दीन	37
भयभीत कांग्रेस और लोकपाल	–सुरेन्द्र चतुर्वेदी	41
भूगोलशास्त्री ज़करिया बिन मुहम्मद क़ज़वीनी	–मौलाना सिराजुद्दीन नदवी	43
मज़दूरों के अधिकार	–डॉ० एम०ए० रशीद	47
कैसे मिटाता है एरेजर ? (बालवीथी)		50



(30) वह समय भी याद करने योग्य है जबकि सत्य का इन्कार करने वाले तेरे विरुद्ध उपाय सोच रहे थे कि तुझे क़ैद कर दें या क़त्ल कर डालें या देश निकाला दे दें ।[25] वे अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह अपनी चाल चल रहा था, और अल्लाह सबसे बेहतर चाल चलने वाला है । (31) जब उनको हमारी आयतें सुनायी जाती थीं तो कहते थे कि "हां सुन लिया हमने, हम चाहें तो ऐसी ही बातें हम भी बना सकते हैं, ये तो वही पुरानी कहानियां हैं जो पहले से लोग कहते चले आ रहे हैं ।" (32) और वह बात भी याद है जो उन्होंने कही थी कि "ऐ अल्लाह ! अगर यह वास्तव में सत्य है और तेरी ओर से है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या कोई दर्दनाक अज़ाब हम पर ले आ ।"[26]

–क़ुरआन, 8 : 30-32

25. यह उस अवसर का उल्लेख है जबकि कुरैश की यह आशंका विश्वास की सीमा को पहुंच चुकी थी कि अब मुहम्मद (सल्ल०) भी मदीना चले जाएंगे । उस समय वे आपस में कहने लगे कि अगर यह व्यक्ति मक्का से निकल गया तो फिर ख़तरा हमारे क़ाबू से बाहर हो जाएगा । चुनांचे उन्होंने आपके मामले में एक अन्तिम निर्णय करने के लिए 'दारुन्नदवा' (सलाह केन्द्र) में क़ौम के तमाम सरदारों की एक मीटिंग की और इस मामले में आपस में सलाह व मशविरा किया कि इस संकट का मुक़ाबला और रोकथाम किस तरह किया जाए । एक फ़रीक़ की राय यह थी कि उस व्यक्ति को बेड़ियां पहनाकर एक जगह क़ैद कर दिया जाए और जीते-जी रिहा न किया जाए । लेकिन यह मशविरा न माना गया, क्योंकि कहने वालों ने कहा कि अगर हमने उसे क़ैद कर दिया तो उसके जो साथी क़ैदख़ाने के बाहर होंगे, वे बराबर अपना काम करते रहेंगे और जब थोड़ी-सी भी शक्ति पैदा कर लेंगे तो उसे छुड़ाने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगाने में कमी न करेंगे । दूसरे फ़रीक़ की राय यह थी कि उसे अपने यहां से निकाल दो । फिर जब वह हमारे बीच न रहे तो हमें इससे कुछ बहस नहीं कि कहां रहता है और क्या करता है ? बहरहाल उसके अस्तित्व से हमारी जीवन- व्यवस्था में बाधा पड़नी तो बन्द हो जाएगी, लेकिन इसे भी यह कहकर रद्द कर दिया गया कि यह व्यक्ति अपनी बातों में जादू जैसा प्रभाव रखता है और दिलों को मोहने में उसे बड़ी निपुणता प्राप्त है । अगर यह यहां से निकल गया तो न जाने अरब के किन-किन क़बीलों को अपना अनुपालक बना लेगा और फिर कितनी शक्ति प्राप्त करके मध्य अरब के क़बीलों को अपनी सत्ता के अधीन लाने के लिए तुम पर धावा बोल देगा । अन्ततः अबू जह्ल ने यह राय दी कि हम अपने तमाम क़बीलों में से एक-एक उच्च वंशीय मुस्तैद जवान चुन लें और ये सब मिलकर एक साथ मुहम्मद पर टूट पड़ें और उसे क़त्ल कर डालें । इस प्रकार मुहम्मद का ख़ून तमाम क़बीलों में बंट जाएगा और बनू अब्दे मुनाफ़ के लिए संभव न होगा कि सबसे लड़ सकें, इसलिए विवश होकर ख़ून बहा (ख़ून का मुआवज़ा) पर फ़ैसला करने के लिए तैयार हो जाएंगे । इस राय को सबने पसन्द किया । क़त्ल के लिए आदमी भी नामज़द हो गये और क़त्ल का समय भी तय कर दिया गया, यहां तक कि जो रात इस काम के लिए निश्चित की गयी थी, उसमें ठीक समय पर क़त्ल करने वालों का गिरोह अपनी ड्यूटी पर पहुंच भी गया, लेकिन उनका हाथ पड़ने से पहले नबी (सल्ल०) उनकी आंखों में धूल झोंक कर निकल गये और उनकी बनी-बनायी चाल ठीक समय पर विफल होकर रह गयी ।

26. यह बात वे दुआ के रूप में नहीं करते थे, बल्कि चुनौती के रूप में कहते थे । अर्थात उनका अर्थ यह था कि अगर वास्तव में यह सत्य होता और अल्लाह की ओर से होता तो उसके झुठलाने का फल यह होना चाहिए था कि हम पर आसमान से पत्थर बरसते और दर्दनाक अज़ाब हमारे ऊपर टूट पड़ता । परन्तु जब ऐसा नहीं होता तो इसका अर्थ यह है कि यह न सत्य है, न अल्लाह की ओर से है ।

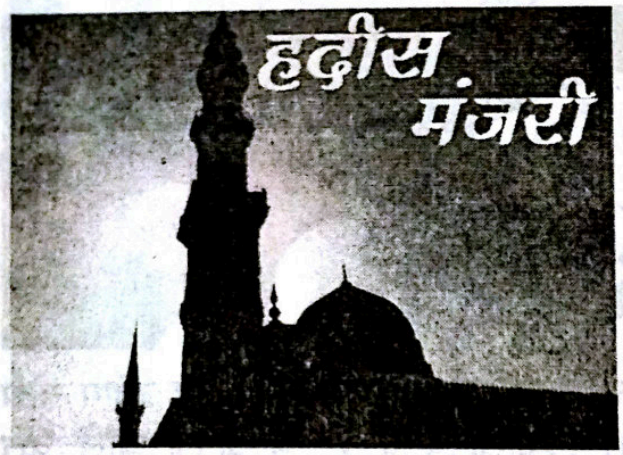

सुशीलता

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) स्वभावत: न तो अश्लील शब्द कहते थे और न अस्वाभाविक रूप से अश्लील शब्द कहते थे और आप कहते थे : ''निश्चय ही तुममें सबसे अच्छे वे लोग हैं जो तुममें शील-स्वभाव में सबसे अच्छे हैं ।''

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू दरदा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : ''क़ियामत के दिन मोमिन की तुला में सुशीलता से बढ़कर कोई चीज़ भारी न होगी और अल्लाह अश्लील वक्ता और अभद्र और व्यर्थ बकने वाले से घृणा करता है ।''

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से उन चीज़ों के विषय में पूछा गया जिनके कारण अधिकतर लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे ? आपने कहा : ''अल्लाह का डर रखना और अच्छा शील-स्वभाव ।'' और आपसे उन चीज़ों के विषय में भी पूछा गया जिनके कारण अधिकतर लोग दोज़ख़ में प्रवेश करेंगे ? आपने कहा : ''मुंह और शर्मगाह (जननेंद्रिय) ।''

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''मोमिनों में ईमान की दृष्टि से सबसे पूर्ण वह व्यक्ति है जो उनमें शील-स्वभाव की दृष्टि से सबसे अच्छा हो । और तुममें अच्छे वे हैं जो अपनी स्त्रियों के प्रति अच्छे हों ।''

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते सुना : ''निश्चय ही मोमिन अपनी सुशीलता से उस व्यक्ति के पद को प्राप्त कर लेता है जो (दिन में) रोज़ा रखता हो और (रात में नमाज़ में ख़ुदा के सामने) खड़ा रहता हो ।''

–अबू दाऊद

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : ''क़ियामत के दिन तुममें मुझे सबसे अधिक प्रिय और मेरे अधिक निकट बैठने वाले वे लोग होंगे जिनके अख़्लाक़ तुममें सबसे अच्छे होंगे । और क़ियामत के दिन तुममें मुझे सबसे अधिक अप्रिय और मुझसे दूर रहने वाले वे लोग होंगे जो बनावट के साथ बहुत ज़्यादा बोलते हैं ('सरसारून') और बाछें फाड़-फाड़कर (रोब डालने के लिए) बातें करते हैं (मुतशद्दिकून)। और अपनी बड़ाई जताते हैं (मुतफ़ैहिकून)।'' लोगों ने कहा कि हम 'सरसारून' और 'मुतशद्दिकून' को जानते हैं । ये 'मुतफ़ैहिकून' कौन हैं ? आपने कहा : ''घमंड करने वाले ('मुतक़ब्बिरून')।''

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

तिरमिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक से सुशीलता की व्याख्याएं रिवायत की है कि उन्होंने कहा : वह खिले हुए चेहरे (प्रफुल्लता) और नेकी को फैलाने और कष्टदायक चीज़ों से बचने का नाम है ।

● हज़रत अनस (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) शील-स्वभाव की दृष्टि से लोगों में सबसे अच्छे थे ।

–बुख़ारी, मुस्लिम

(रियाजुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय

हिन्दी वेबसाइटें

www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

भ्रष्टाचार के सिंहासन पर लोकतंत्र !

देश में पहली बार भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ वातावरण इतना धनीभूत हुआ है कि आम जन-चेतना विभिन्न माध्यमों से मुखरित हुई है । अन्ना हज़ारे के व्यावहारिक प्रयासों को जो जन-समर्थन प्राप्त हुआ है, वह किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए उपेक्षित और त्याज्य नहीं हो सकता, लेकिन हमारे देश की लोकतांत्रिक प्रणाली का यह आलम है कि जनसमर्थन की परवाह नहीं करती । यह माना जा सकता है कि बाबा रामदेव के भ्रष्टाचार विरोधी प्रयासों में राजनैतिक घोल मिला हुआ था, लेकिन अन्ना हज़ारे टीम की क्यों अनदेखी की गयी ? क्या किसी पार्टी विशेष द्वारा अन्ना टीम की मांगों का समर्थन कर देने भर से केन्द्र सरकार के लिए अस्तित्व का संकट पैदा हो जाने की आशंका थी ? कुछ राजनैतिक प्रेक्षकों का मानना है कि इस प्रकार के मामले में राजनैतिक रंग देखकर सरकारें डरती हैं, इसलिए दमनकारी क़दम उठाती हैं । ऐसा ही क़दम इन्दिरा गांधी ने जयप्रकाश नारायण टीम के प्रति उठाया था और इसी प्रकार बाबा रामदेव के साथ व्यवहार हुआ । इन स्थितियों के विपरीत अन्ना हज़ारे समेत सिविल सोसाइटी तो ऐसी नहीं है कि उसकी मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार न किया जाए, किन्तु व्यवहार में आशा के विपरीत यही सब कुछ हुआ ।

केन्द्र सरकार के एक बड़बोले मंत्री का कहना है कि संसद को ही क़ानून बनाने का अधिकार है । बात ठीक है, लेकिन क्या संसद जनसमर्थन एवं पक्ष को ताक़ पर रखकर चलेगी और इस प्रकार लोकतंत्र का आडंबर भी चलता रहेगा । इन मंत्री जी ने यह भी फ़रमाया कि हज़ारे टीम द्वारा प्रस्तावित लोकपाल विधेयक असंवैधानिक है, इसलिए इसकी सभी बातों को सरकारी विधेयक में नहीं शामिल किया गया है । क्या मंत्री जी को नहीं मालूम कि वर्तमान संविधान में ज़रूरतों और अपेक्षाओं के मद्देनज़र एक नहीं सैकड़ों संशोधन संसद द्वारा किये जा चुके हैं । बात केवल प्रधानमंत्री और शीर्ष न्यायपालिका तक को लोकपाल के दायरे में लाने की नहीं है, लोकसभा में पेश सरकारी विधेयक को सिरे से जनोन्मुखी और जनोपयोगी नहीं बनाया गया है, जिसके कारण भ्रष्टाचार विरोधी इस विधेयक में दर्जनों ऐसे छेद बना दिये गये हैं, जिनसे काला धन-संवर्धन सहित भ्रष्टाचार की धारा सतत् बहती रहे । सरकार की ओर संभवत: जान-बूझकर इस मंशा के अन्तर्गत विधेयक बनाया गया है कि पहले के तमाम लोकपाल विधेयकों की भांति यह विधेयक भी अपनी मौत आप 'मर' जाए और इसका जनाज़ा यह कहकर निकाला जाए कि विपक्ष ने इसे भी पास नहीं होने दिया । वास्तव में सच्ची बात यह है कि कोई भी सक्रिय राजनीतिक दल भ्रष्टाचार के प्रवाह को रोकना नहीं चाहता । इसका बड़ा कारण भ्रष्टाचार रूपी धन के ज़रिये ही दल चलता है, राजनेताओं एवं अधिकारियों की तिजोरियां भरती हैं और अन्य काली करतूतें अंजाम दी जाती है । अत: सरकार नहीं चाहती कि कोई ऐसा प्रभावकारी क़दम उठाया जाए, जिसके कारण भ्रष्टाचार का स्रोत सूख जाए ।

इस प्रयोजन के तहत बाबा रामदेव के ख़िलाफ़ शिकंजा कसा जा रहा है । एक ओर जहां उनके विशेष सहयोगी बालकृष्ण को सी॰बी॰आई॰ ने घेरे में ले लिया, वहीं दूसरी ओर बाबा रामदेव के गुरुजी की हत्या की जांच से संबंधित फ़ाइल खोली गयी है, जिसके बारे में कहा जाता है कि उनकी हत्या में बाबा रामदेव का हाथ है !? अन्ना हज़ारे का चरित्र-हनन भी हो चुका है । उन्हें मोदी समर्थक बताया गया, हालांकि अन्ना ने अपने से संबद्ध वक्तव्य का खंडन कर दिया । यह भी कहा गया कि गुजरात में जब मोदी द्वारा मुसलमानों का खुलेआम मर्डर किया जा रहा था, तो अन्ना ने इसकी निन्दा तक नहीं की, फिर वे किस प्रकार से गांधीवादी बनते हैं ? यहां मुद्दा भ्रष्टाचार का है, अत: दूसरी बातों में उलझना ठीक नहीं । फिर अन्ना कोई पालिटिकल आदमी भी नहीं कि मोदी द्वारा किये गये मुस्लिम-संहार की उसी समय निन्दा करते । बहरहाल उन्होंने इसकी निन्दा की है और मोदी का समर्थन कभी भी नहीं किया । हो सकता है कि अन्ना जे॰पी॰ मूवमेंट से प्रभावित हों, जिसके नरेन्द्र मोदी भी प्रोडक्ट रहे हैं, जहां तक उनके भ्रष्टाचार विरोधी प्रयासों का सवाल है, तो उन्होंने कई शांतिपूर्ण विरोध-अनुष्ठान करके जनचेतना पैदा की है । इस चेतना का सम्मान सरकार को इस रूप में करना चाहिए कि वह जनाकांक्षाओं के अनुरूप आगे बढ़े, अन्यथा कितनी देर है इस काव्य-वाक्य के पूरा होने में कि 'सिंहासन ख़ाली करो कि जनता आती है'?

अंधविश्वासों पर ख़ामोशी क्यों ?

जुलाई 2011 का 'कान्ति' अंक पढ़ा । इसकी प्राणवत्ता एवं श्रेष्ठता की प्रशंसा किन शब्दों में करूं । आपके विलक्षण वैदुष्य, हिन्दी पर अद्‌भुत अधिकार एवं 'साईंटिफ़िक टैम्पर' आधारित जीवन दृष्टि, सामाजिक मंगल हेतु आपकी प्रतिबद्धता–ये सभी बातें मुझे आपका मुरीद बनाये हुए हैं । अलबत्ता, प्रमादवश मैं इसमें प्रायः लिख नहीं पाता हूं । इच्छा बहुत होती है । पहले भी कई अवसरों पर लिखता रहा हूं । बहरहाल आपके प्रति एवं 'कान्ति' के प्रति मेरी अनेकशः शुभकामनाएं ।

वैसे तो इस अंक में समस्त सामग्री पठनीय है पर मैत्रेयी पुष्पा का लेख 'अंधी आस्थाओं का मायाजाल' विशेष रूप से पठनीय है । बहुत ही विचारोत्तेजक, नेत्र-उन्मीलक एवं युगानुकूल लेख है । बड़ी विडम्बना है कि हमारी नितांत विज्ञानोन्मुखी इस सदी में पाखंड कुकुरमुत्तों और खरपतवार की तरह पनप रहे हैं । दुर्भाग्य की बात है कि यह सब कुछ बाबाओं, स्वामी, संतों, महंतों (तथाकथित) के द्वारा किया जा रहा है । रोज़ ही इन बाबाओं को बेनक़ाब होते देखा जा रहा है, उनकी अकूत सम्पदा एवं सामाजिक वर्चस्व (जो हमारे अंधविश्वासों, भाग्यवाद एवं अंधआस्थाओं का परिणाम है) की ख़बरें हम अख़बारों, टी॰वी॰ चैनल्स में पढ़ते-देखते रहते हैं । कोई कुछ भी नहीं कर पाता । चैनल्स इस प्रकार के बाबाओं को एक्सपोज तो कभी-कभी करते दिखायी देते हैं पर अधिकतर चैनल्स इन ढोंग-पाखंडों को पनपाने में ही मदद करते हैं । क्या हो गया है हमारी बुद्धि को, हमारे देश की प्रज्ञा को । आख़िर हमारी ख़ामोशी का क्या मतलब है ? क्यों नहीं पूरा देश इस प्रकार के दुष्कृत्यों को शिकस्त देने के लिए खड़ा हो जाता है ? कितने खोखले होते जा रहे हैं हम ! यह लाचारी क्यों, यह बेबसी कैसी ।

अख़्लाक़ का जलता हुआ घर देख रहे हैं,
देखा भी नहीं जाता, पर देख रहे हैं ।

वक़्त आ गया है कि हमें मिलकर इन पाखंडों, अंधविश्वासों, अंधआस्थाओं के प्रति मिलकर एक जेहाद (क्रूसेड) छेड़नी चाहिए । केवल मूक, मौन या तटस्थ रहकर हम इससे निजात नहीं पा सकेंगे । 'दिनकर' याद आते हैं :

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध ।

अंत में इस प्रकार के लेख प्रकाशित करके आप एक सामाजिक-जागरण का काम कर रहे हैं । आपको पुनः साधुवाद । पाखंडों के प्रति यह जंग चलती रहनी चाहिए–

न बेसबब मन पर बोझ भारी रखिए ।
ज़िन्दगी इक जंग है, जारी रखिए ।

अगस्त 2011 का अंक सामने है । हर अंक की तरह बेहतरीन पठनीय सामग्री से भरपूर । विशेष रूप से 'इस्लाम' व्यावहारिक जीवन-व्यवस्था, 'रमज़ान के रोज़े के वास्तविक लाभ, 'ईश्वर अवतार नहीं लेता', 'भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ जंग' बहुत अच्छे लेख हैं । आपके सुसंपादन हेतु बधाई एवं 'कान्ति' के दीर्घजीवन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

डॉ॰ नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'
जवाहरनगर, जयपुर (राज॰)

चारित्रिक पतन के प्रेरक तत्व

मोह व अहंकार सत्ता लोलुपता व पदलोलुपता चारित्रिक पतन के प्रमुख कारण वर्तमान में गिरी हुई राजनैतिक परिस्थितियों में देखने का सशक्त माध्यम है । ऐसा कहा जाता है कि राष्ट्र को एवं जनता को चलाने वाली ईश्वरीय शक्ति है, परन्तु वास्तव में देखा जाए तो उपरोक्त सभी को चलाने वाला मोह है । मोह के पीछे पारिवारिक संबंध दिन-प्रतिदिन टूटते जा रहे हैं । इसी दुर्गुण के कारण अधिकांश व्यक्ति किसी भी धार्मिक व सामाजिक संस्था में किसी भी पद पर बैठकर सत्ता हासिल करना चाहता है । नाजायज़ संपन्नता, चापलूसी अपराधीकरण स्वार्थ भावना आदि ऐसे प्रेरक तत्व हैं, जिसके कारण सत्ता हथियाना व पदासीन होना हैं अधिकांश राजनीति के दूषित होने से ये अनैतिक गुण बढ़ते जा रहे हैं, जिनके कारण नैतिकता व आध्यात्मिकता का ह्रास हो रहा है जीवन में सत्ता के कारण व्यक्ति क्षणिक सम्मान पाता है, पर संयम व त्याग से श्रद्धा

पाता है, जो कि अटूट है ।

इतिहास के पन्नों को उलटकर देखिये । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो व्यावहारिक रूप से उन्हीं व्यक्तियों का सम्मान है, जिन्होंने उच्च चारित्रिक दृष्टिकोण को अपने जीवन में अंगीकार किया है । उज्ज्वल चरित्र ही शारीरिक व मानसिक चित्रण का क्रियात्मक दर्पण है । उदाहरण के लिए प्रियदर्शी अशोक ने कलिंग विजय के पश्चात सत्य व अहिंसा को ग्रहण किया । उसमें सत्ता व पद के मोह के कारण हिंसा को अपनाया था, परंतु कलिंग विजय के पश्चात प्रियदर्शी अशोक दुराचारी से सदाचारी बन गया । आज उसका नाम दुनिया के इतिहास में प्रसिद्ध है । जिन्होंने पदलोलुपता व सत्ता लोलुपता को त्याग दिया, उन्होंने समस्त विश्व को सत्य, अहिंसा व ईमान का संदेश दिया । वर्तमान में अधिकांश सत्ताधारी को जिन्हें सदाचार सद्विचार व निस्वार्थ भावना की चिंता नहीं ऐसे लोग अनैतिक सत्ता व पद के कारण भ्रष्ट आचरण की राह पर अग्रणी है । परन्तु हम समस्त इनसे विमुख होते जा रहे हैं । आज सच्ची लोकतांत्रिक प्रणाली जिसको दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वंशानुगत प्रणाली का ही बीजारोपण हैं ।

सत्ता व पद के लोभ के कारण लोग सही मार्गदर्शन देने वाली पुस्तकों के अध्ययन से परे होते जा रहे हैं । जिसके कारण बाल्यवस्था में ही संस्कार विहीन होकर युवा पीढ़ी नैतिकता के चारित्रिक दृष्टिकोण को नहीं अपना रही हैं । आगे जाकर उन्हीं को सत्ता व पद का मोह, अहंकार होता है । पुरातन भारतीय सभ्यता व सांस्कृतिक का ह्रास होता जा रहा है । भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा सदा जीवन और उच्च विचार को अपनाती है । सच्चा चारित्रिक दृष्टिकोण खो गया तो सब कुछ खो गया । यह हमारा आदर्श दृष्टिकोण था । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसका विपरीत कथन चलायमान हैं हमारा पुनीत कर्तव्य है कि चारित्रिक पतन को दूर करने के लिए आचरणहीन सत्ता लोलुपता व पदलोलुपता को त्यागना पड़ेगा ।

रामस्वरूप झंवर

शास्त्रीनगर विस्तार, भीलवाड़ा (राज०)

कान्ति : एक रोशनी की तरह

आज ज़रूरत है कि देश-दुनिया के सभी पंथों-मज़हबों, जिनका अंतिम लक्ष्य-गंतव्य वस्तुतः एक ही है, में पारस्परिक समझ बढ़े, सब सहगमन करके देशवासियों के चिंतन व कर्म को ऊंचा उठाने के लिए काम करें और राष्ट्र-विश्व के कल्याण के लिए सम्मिलित प्रयास करें । 'कान्ति' पत्रिका इसके लिए एक 'रोशनी' की तरह है, ऐसा हमारा मानना है । ज़रूरत है कि हम सब 'कथनी व करनी' के भेद की दीवार को तोड़कर एक साथ आगे बढ़ें । उज्ज्वल भविष्य हमारी बाट जोह रहा है ।

'कान्ति' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं आपके व सभी लोकसेवी सहयोगी बंधुओं के निरोग दीर्घायुष्य और यशस्वी जीवन के लिए हमारी भावभरी मंगलकामनाएं ।

राम महेश मिश्र

संयुक्त निदेशक

देव संस्कृति विश्वविद्यालय (जनसंपर्क, प्रसार एवं सेवायोजन विभाग), हरिद्वार (उत्तराखंड)

'दलित जहान'

जुलाई 2011 का 'कान्ति' का अंक प्राप्त हुआ धन्यवाद! अति सुन्दर लगा । वैसे तो पूरा अंक ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक रहता है । रचनाएं (ग़ज़ल, कविताएं, लेख) सभी स्तरीय रहती हैं किंतु कविता 'दलित जहान' अति सुन्दर लगी... हक़ीक़त से ओतप्रोत है, बधाई ।

राम सहाय वर्मा

नोएडा

'सदाकांक्षा' 2011

'सदाकांक्षा' (2011) का अगला अंक विभिन्न विधाओं पर केन्द्रित होगा। रचनाकार बन्धुओं से निवेदन है कि विभिन्न विधाओं पर अपनी पांच उत्कृष्ट रचनाएं संक्षिप्त जीवन परिचय के साथ 30 अक्तूबर 2011 तक निम्नलिखित पते पर भिजवाने का कष्ट करें। 'सदाकांक्षा' के निरंतर प्रकाशन के लिए हमें आपका भरपूर सहयोग अपेक्षित है।

संपादक, 'सदाकांक्षा'

इस्लामी साहित्य संगम

2703, बारादरी, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

ई-मेल : sadakanchha2004@rediffmail.com

पाप और भ्रष्टाचार

आजकल भ्रष्टाचार और काले धन को लेकर अनशन हो रहे हैं और देश का वातावरण भी जागरूक बन गया है । एक अच्छी पहल है । लेकिन मुझे याद आता है कि बचपन में मैंने एक कहानी सुनी थी कि एक बार एक व्यक्ति ने ईश्वर की आराधना की और वे प्रसन्न हो गये और बोले कि वरदान मांगो तो उसने कहा कि संसार से पाप समाप्त होना चाहिए ।

इस पर ईश्वर ब्रोले यह काम तो तुम्हें करना है । मैंने धरती पर भेजने से पहले ही तुम्हें अच्छे-बुरे की पहचान बता दी है । धरती पर भी उसके मार्गदर्शन की व्यवस्था है ।

अत: यह काम तो मनुष्य के करने से होगा और यही उसकी परीक्षा है । इसी प्रकार भ्रष्टाचार भी संसार से विदा नहीं ले सकता जब तक स्वयं मनुष्य इसे समाप्त करने के लिए प्रयास न करे । यह बात ज़रूर है कि इसे कम किया जा सकता है ज़रूर । और वह भी ईमान पर चलने से ही कम होगा ।

ऐसे में लोगों को चाहिए कि वे ईश्वर के बताये मार्गनुसार भ्रष्टाचार को कम करने की कोशिश करे । अनशन पर बैठने से समस्या का समाधान नहीं होता ।

हां अब भी बाबा रामदेव के लिए एक ही रास्ता बचा है कि वह अपने समस्त शिष्यों के साथ सभी राजनेताओं, सांसदों, कर्मचारियों से एक अन्डर टेकिंग भरवाएं कि वे भ्रष्टाचार नहीं करेंगे । फिर चरित्रवानों की एक टीम तैयार हो जाए जिससे भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया जाना सरल बन जाए ।

इस कार्य में सभी धर्म गुरुओं को आगे आना चाहिए और भ्रष्टाचार न करने का नियम दिखाना चाहिए ।

घेवरचंद गोदीका

जयपुर (राज॰)

सकारात्मक कार्य

'कान्ति' के ज़रिये आप इस्लाम के उन पन्नों को खोलते हैं जो ग़ैर-मुस्लिम नहीं जानते । हिन्दुस्तान में ऐसी सोच वाली पत्रिकाएं बदलाव का बहुत बड़ा काम कर रही हैं । आपकी सोच को सलाम ।

आपकी दृष्टि आसमान-धरती को समान तरीक़े से देखती है । छोटी-छोटी कथाएं, कविताएं...धन्यवाद के अधिकारी हैं आप ।

आप व 'कान्ति' परिवार को हार्दिक शुभेच्छाएं ।

साहिल

राजकोट, गुजरात

शराब पर प्रतिबंध लगे

सरकार पाप जननी शराब पर प्रतिबंध लगाने के बजाय शराब पीने की आयु तय कर रही है । शराब इन्सान और समाज के स्वास्थ्य को, नैतिकता को, आर्थिक स्थिति को बरबाद करती है । शराब के कारण महिलाएं और बच्चे बहुत मुसीबत उठाते हैं ।

गांधी जी ने आज़ादी की लड़ाई में शराब बन्दी को भी शामिल किया था और कहा था कि आज़ादी के बाद शराब समुद्र में बहा दी जाएगी ।

देश के संविधान में भी धारा 47 में शराबबन्दी की व्यवस्था रखी गयी है । लेकिन सभी राज्य सरकारों ने शराब की दुकानें खोल रखी हैं । शराब से होने वाले हर प्रकार के नुक़सानों को देखते हुए जनहित और देशहित में शराब पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए ।

हसनैन कैफ़

भंडारा, महाराष्ट्र

POSTAL LIBRARY

जीवन ज्योति केन्द्र

पोस्टल लाइब्रेरी



Bainy Singh Ki Talaiya,
Gohalpur, Jabalpur-482002
Mob. : 9300929747, 9300101373

ख़ुदा ख़ैर करे

दौरे तूफ़ां हुए ज़ाहिर हैं ख़ुदा ख़ैर करे ।
हर तरफ़ डूबते मंजर हैं ख़ुदा ख़ैर करे ।।

बद से बदतर सभी हालात हुए जाते हैं ।
आदमी हो रहा बर्बर है ख़ुदा ख़ैर करे ।।

धर्म के नाम पर नफ़रत का ज़हर फैलाने ।
देश में भर गये विषधर हैं ख़ुदा ख़ैर करे ।।

आशियां कितने जले कितने मरे कौन कहे ।
उठ रहे रोज़ बवंडर हैं ख़ुदा ख़ैर करे ।।

कैसे रोकेंगे ख़राबी ये उन्हें इल्म नहीं ।
और वो देश के रहबर है ख़ुदा ख़ैर करे ।।

ये भला है वो बुरा, कौन उन्हें समझाये ।
उनके बदले हुए तेवर हैं ख़ुदा ख़ैर करे ।।

आग तो घर में लगी है चले परिभाषा पूछने ।
और वो जा रहे बाहर हैं ख़ुदा ख़ैर करे ।।

आसमां तेरी बुलन्दी को नज़रअंदाज़ किये।
आज वो उड़ रहे बेपर हैं ख़ुदा ख़ैर करे ।।

उथले पानी में उन्हें डूबना पसन्द नहीं ।
देश में तीन समुन्दर हैं ख़ुदा ख़ैर करे ।।

प्रमोद 'पुष्कर'
91, चित्रगुप्त नगर, कोटरा सुल्तानाबाद

नेकी का उपहार

ज़मीं हिला दी जाएगी जब आएगा भूचाल
बोझ यह अपने गर्भ का बाहर देगी डाल

.....

अरे इसे यह क्या हुआ कहेगा तब इन्सान
कर देगी उस दिन ज़मीं अपना हाल बयान

.....

धरती को परमेश्वर देगा यह आदेश
बदले अपना रूप यह बदले अपना वेश

.....

जुदा-जुदा हालात में पलटेंगे जब लोग
कर्मों का लेखा वहां देखेंगे तब लोग

.....

कण भर भी जिसने किया होगा पुण्यकार
पाएगा व्यक्ति वही नेकी का उपहार

.....

'राज़' किया जिसने कोई ज़र्रा भर दुष्काम
देखेगा बदकार वह अपना बद-अंजाम ।

यूसुफ़ 'राज़'
भीममंडी, कोटा (राज०)

पथ प्रदर्शक

'कान्ति' एक आईना है,
राष्ट्र के लिए !
'कान्ति' एक मार्गदर्शक है,
चरित्र के लिए !
'कान्ति' एक सद्साहित्य है,
समाज के लिए !
'कान्ति' एक पथ-प्रदर्शक है,
सर्वज्ञान के लिए !

एक-एक

एक-एक शब्द जोड़ने से
ग्रंथ बन जाता है !
एक-एक कंकर जोड़ने से
भवन बन जाता है !
एक-एक बूंद डालने से
घड़ा भर जाता है
एक-एक अच्छी बात लिखने से
आदमी विद्वान बन जाता है ।

यशपाल जैन 'आदर्श'
राजापार्क, जयपुर

بسم الله الرحمن الرحيم

''अल्लाह की
बन्दगी करो और उसके
साथ किसी को साझी न ठहराओ।
और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता
के साथ, नातेदारों, अनाथों, मोहताजों,
नातेदार पड़ोसियों के साथ, और उन
पड़ोसियों के साथ जिनका संबंध न हो,
और पास के व्यक्ति के साथ,
और राह चलने वालों के साथ,
और उनके साथ जो तुम्हारे
अधिकार में हों ।''
(क़ुरआन, 4:36)

A WELL WISHER
BANGALORE

जहां के वास्ते एक आख़िरी निज़ाम आया

■ माहिरुल क़ादरी

जिस शानदार उद्देश्य के प्रचार और पूर्णता के लिए मुहम्मद दुनिया में भेजे गये थे, उसके प्रकटीकरण और घोषणा का समय निकट आता जा रहा था । मानवता के इतिहास का अन्तिम और सर्वाधिक चमकदार पन्ना उलटने के लिए प्रकृति के हाथ हरकत में आने वाले थे । अंधेरा आप ही आप कपकपाता और सिमटता जा रहा था, मानो उजाले के लिए जगह ख़ाली करनी है । बुराइयां पसीना-पसीना हुई जा रही थीं कि नेकियों का दौर शुरू होने वाला है, गुमराही की जान होंठों पर आ गयी थी कि हिदायत का सितारा क्रांति के झरोखे से झांक रहा है । सृष्टि का एक-एक कण परिवर्तन की अनुभूति कर रहा था और–

जब अपनी पूरी जवानी पर आ चुकी दुनिया,
जहां के वास्ते एक आख़िरी निज़ाम आया ।

का सन्देश वातावरण में गुंजरित हो रहा था ।

मुहम्मद पर चिंतन-मनन की स्थिति छायी रहने लगी । मक्का से थोड़ी दूरी पर हिरा नाम की एक गुफ़ा थी । आप सत्तू और पानी लेकर वहां चले जाते और कई-कई दिन तक तप-जप और चिंतन-मनन करते । मन को वश में करने का यह यत्न और मग्नता की यह स्थिति किसी 'दैवी प्रदर्शन' की बाट जोह रही थी । बड़ी बेचैनी से आपको किसी संदेश का इन्तिज़ार था । मन में उद्विग्नता थी । इसी खोज, तड़प और बेचैनी को क़ुरआन ने 'मनाल' कहा है । मन की बेचैनी दिन-रात बढ़ती जा रही थी । खाना-पानी समाप्त हो जाता, फिर भी भूखे-प्यासे खुदा की याद गुफ़ा के एकांत वास में जारी रहती । सत्य चालीस साल से झांक रहा था, पर पूरे तौर पर खुलकर सामने नहीं आया था । हृदय कली पावन समोर के इन्तिज़ार में थी, खोज और बेचैनी की गिरहें, पालनकर्ता के नाखुन की राह देख रही थीं । निगाहें बार-बार आसमान की ओर उठतीं और सजदे में झुक जातीं ।

इन्तिज़ार और लगातार इन्तिज़ार ! यहां तक कि हिरा की गुफ़ा में यकायकी रोशनी आयी । फ़रिश्ता खुदा का पैग़ाम लेकर हाज़िर हुआ और उस ईश सन्देश के शब्द स्पष्ट स्वरों के साथ मुहम्मद के मुख से दोहराये गये । इस शुभ सन्देश और पहली वह्य में खुदा के नाम के साथ इन्सान की पैदाइश का उल्लेख था और वह इसलिए कि इन्सानों से खुदा का टूटा हुआ रिश्ता जोड़ने के लिए मुहम्मद (सल्ल०) को नुबूवत अता हुई थी और इसी महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपको संसार में भेजा गया था ।

किसी मामूली बादशाह, शासक, अधिकारी का हुक्म पढ़कर और सन्देश सुनकर मन में उथल-पुथल होने लगती है और यह सृष्टि के स्रष्टा और पूरी दुनिया के पालनहार का सन्देश था–उस की ओर से वह्य भेजी गयी थी, जिसकी शक्ति और सामर्थ्य संपूर्ण सृष्टि को घेरे में लिए हुए है, जिसके हाथ में तमाम लोगों की चोटियां हैं । वह अगर चाहे तो ये ऊंचे पहाड़ पलक झपकने से पहले धुंए की तरह उड़ जाएं, शोर मचाते समुद्र मरुस्थल बन जाएं और ठंडे सितारों से अंगारे बरसने लगें ।

स्वभावत: इस महान सन्देश के मिलने के बाद हृदय में प्यार के साथ आतंक को भी जन्म लेना चाहिए था । यही मानव-स्वभाव है । हज़रत मुहम्मद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का मन भी अल्लाह के रौब व जलाल का प्रभाव लिए बिना न रह सका ।

यह संदेश अगर मुहम्मद, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के बजाए किसी पहाड़ पर उतरता, तो निश्चित रूप से पहाड़ टुकड़े-टुकड़े हो जाता । यह मुहम्मद के प्रतिष्ठावान हृदय ही की शक्ति थी, जिसने ज़िम्मेदारी के साथ इस भारी बोझ को सहारा 'लिया । जिबरील थे, खुदा का कलाम था, तजल्लियां थीं, मुहम्मद अरबी थे और हिरा की गुफ़ा थी–हम तो बस इतना ही कह सकते हैं, जो बात हमारे ऊपर नहीं बीती, जिसको हम हमने अपनी आंख से नहीं देखा, उसकी व्याख्या संभव कैसे है ? वह्य की स्थिति वह्य वाले के अतिरिक्त बता कौन सकता है ? यही वह स्थान है, जहां शब्द साथ छोड़ जाते हैं, व्याख्याओं का जिस जगह दम घुटने लगता है, जुबानें गूंगी हो जाती हैं और क़लम कांप जाता है ।

हम अधिक से अधिक अपनी भाषा में इतना कह सकेंगे कि हिरा की गुफ़ा का भाग्य चमक गया, उसके कण तूर पर्वत से भी भाग्यशाली ठहरे । पूरा वातावरण ज्योतिर्मय हो गया, पर ये सभी उपमाएं औपचारिक उपमाएं हैं, जो हर किसी के लिए प्रयुक्त होती रहती हैं । अल्लाह के रसूल मुहम्मद को जिन तजल्लियों और जिन अनुभूतियों का सामना करना पड़ा, उनके लिए ये रस्मी बातें शोभा नहीं देतीं । हमारी इन्द्रियों ने जिन अनुभूतियों और अवलोकनों का सपना भी नहीं देखा, उन्हें हम बता भी तो नहीं सकते । दर्शनशास्त्र इस स्थान पर चकित रह जाता है, बुद्धि की आंखें चकाचौंध रह जाती हैं और मस्तिष्क आश्चर्य में पड़ जाता है । यही वह पावन स्थान और परोक्ष जगत है, जहां विश्वास और मात्र विश्वास के दीपों की रोशनी में सन्मार्ग नज़र आ सकता है । अनिश्चय और संदेह के पांव यहां जम ही नहीं सकते । तंगनज़र लोग, जो 'रोटी और मेदे' से आगे देखना ही नहीं चाहते, इन आध्यात्मिक अनुभूतियों और परोक्ष मर्मों को आख़िर कैसे समझ सकते हैं । इस पर विश्वास करने के लिए कार्ल मार्क्स और स्टालिन की दिमाग़ नहीं, अबू बक्र सिद्दीक़, अली मुर्तज़ा और बिलाल हब्शी की अन्तर्दृष्टि चाहिए ।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) हिरा की गुफ़ा से मकान तशरीफ़ लाए, तो शुभ माथे से पसीना टपक रहा था । अल्लाह के रौब से चेहरे का रंग बदला हुआ था । घर आते ही हज़रत ख़दीजा से फ़रमाया–

'मुझे चादर ओढ़ाओ, चादर ओढ़ाओ ।

ख़दीजा ने जल्दी से दौड़ कर चादर उठायी और आपको उढ़ा दी । आप ने पूरी घटना सुनायी । ख़दीजा के गुणी स्वभाव ने इस घटना में तनिक भी सन्देह तथा आश्चर्य नहीं व्यक्त किया, बल्कि कहा कि आपका व्यक्तित्व भलाइयों का स्रोत है, खुदा आपको नष्ट नहीं करेगा । फिर वह आपको वर्क़ा बिन नौफ़ुल के पास, जो एक महा ईश-भक्त थे, लेकर गयीं । वर्क़ा ने कहा कि यही वह फ़रिश्ता है, जो बनी इसराईल के नबियों पर आया करता था । मुहम्मद ! मैं तुम्हारा अभिनन्दन करता हूं ।

हर्ष हो या दुख, प्रेम हो या आतंक, इन अनुभूतियों की तीव्रता से हृदय पर एक भार-सा महसूस होता है और जब तक दूसरे को यह बता न दिया जाए, यह भार हल्का नहीं होता । यह मानव-स्वभाव है और मुहम्मद (सल्ल०) से इस नश्वर जगत तथा कार्य कारण के इस संसार में स्वभाव की यही सहजता प्रकट हुई है ।

फिर शायद प्रकृति इसके माध्यम से औरत का स्थान और पद नबी बनने के पहले ही दिन उच्च करना चाहती थी अर्थात यह कि पहली वह्य और नुबूवत के आरंभ की पहली पुष्टि एक महिला के मुख से हुई, ताकि उसकी प्रेम भरी सान्त्वनाओं से रौब और आतंक में प्रेम-रस घुल उठे । अल्लाह के नाम और संदेश का रौब स्वत: बोलती हुई पुष्टि है । वह व्यक्ति मानव-स्वभाव की कोमलता और आदमी की तबियत की सुरुचि को नहीं जानता, जो इस सादा-सी बात की पुष्टि और सामान्य पुष्टि के उलझावे में संदेह का द्वार खोलना चाहता है–लोग घटनाओं को अपने निजी रुचियों के पैमाने से नापना चाहते हैं और जब कोई घटना इस पैमाने पर पूरी नहीं उतरती, तो फिर वे उसके घटित होने से ही इन्कार कर देते हैं–यह भ्रम में पड़ने और भ्रमित करने की बात है ।

सत्य की घोषणा

सत्य की घोषणा और भलाइयों के प्रचार पर नुबूवत-पद और रिसालत-दायित्व का आधार है । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) भी इसी काम पर नियुक्त किये गये । यह कार्य जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही कठिन भी है । यहां क़दम-क़दम पर मुसीबतों, रुकावटों और विरोधों का सामना करना पड़ता है । इस राह में कांटे भी बिछाये जाते हैं, सिर पर कचड़ा भी डाला जाता है, गालियां भी सुननी पड़ती हैं और पत्थरों की वर्षा से शरीर भी लहूलुहान हो जाता है । कोई दुनियादार और लोभी व स्वार्थी व्यक्ति हो, तो इन विपत्तियों से घबरा कर धैर्य खो दे कि मैं बैठे-बिठाये अपनी जान जोखिम में क्यों डालूं ? लोग सत्य मार्ग पर नहीं आते तो न आएं, मैं कष्ट क्यों उठाऊं ?

पर नबी और रसूल के दिल को अल्लाह सब्र, धैर्य और दृढ़निश्चय की विशेष क्षमता और शक्ति देता है । कोई विरोध उसे सत्य की घोषणा से रोक नहीं सकता । उसके मार्ग में जोखिम के पहाड़ आते हैं, पर वह दृढ़ता के साथ अपने क़दम आगे ही बढ़ाता रहता है । तलवारों की धारें, बरछियों के फल, नेज़ों की अनियां और तीरों की नोकें भी उसे विचलित नहीं कर पातीं । तलवार के नये घावों से लहू टपकता होता है और उस समय भी उसके मुख पर अल्लाह का गुणगान होता है । मुहम्मद जिस वक़्त नबी बनाए गये थे,

पूरा वातावरण अंधकारमय था । लोग बिगड़े हुए थे और समाज गन्दा था । शताब्दियों की बुराइयां जड़ पकड़ चुकी थीं, युगों के पाप आदत बन चुके थे । हर ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखायी देता था । ऐसी स्थिति में सुधार-कार्य करना केवल एक नबी का ही काम हो सकता था, उस शुभ एवं पावन व्यक्तित्व का काम, जिसे ख़ुदा का समर्थन और सहायता प्राप्त होती है ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) एक दिन सफ़ा पर्वत पर तशरीफ़ ले गये और लोगों को आवाज़ दी, जैसे कोई प्रमुख घोषणा करनी हो, और किसी महत्वपूर्ण घटना की सूचना देनी हो । जिसने इस पुकार को सुना, वही सफ़ा की ओर चल पड़ा । एक ने दूसरे से कहा कि आज न जाने क्यों अब्दुल्लाह के लाडले मुहम्मद सफ़ा की चोटी से लोगों को पुकार रहे हैं, चलो चलकर देखें बात क्या है ? और वहां मुहम्मद सच्चे, अमानतदार मुहम्मद, जो अपनी प्रतिष्ठा में अपूर्व हैं–उन्होंने किसी मुख्य सूचना ही के लिए बुलाया होगा ।

एक आया, दूसरा आया, संख्या बढ़ती ही गयी, यहां तक कि एक भीड़ जमा हो गयी, इनमें बूढ़े कुरैश भी थे, जिन्होंने समय के बहुत उतार-चढ़ाव देखे थे, जवान भी थे जो अनुभवहीन थे, पर उनमें साहस, उत्साह और उमंग थी, बच्चे भी थे जिनके जीवन का घरौंदा अभी बन ही रहा था । कुछ लोगों ने सोचा कि मुहम्मद ने जिस तरह पहाड़ी पर से पुकारा है, बिल्कुल संभव है, दुश्मन के हमले की सूचना मिली हो । इसलिए ख़ाली हाथ चलना ठीक नहीं, हथियार साथ रखने चाहिएं । कुछ ऐसे भी थे, जो बाज़ार में खजूर खा रहे थे, उसी हालत में चल दिये कि हाथ में खजूरें थीं और होंठों पर शीरा लगा हुआ था । बड़ों की देखा-देखी बच्चे भी शामिल हो गये ।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) अति गंभीर मुद्रा में दायित्व भाव के साथ सफ़ा की चोटी पर खड़े थे । आपके चारों ओर कुरैश की भीड़ थी । सबकी नज़रें हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के चेहरे पर थीं कि न जाने वे क्या कहने वाले हैं ? इससे पहले तो इस प्रकार मुहम्मद ने लोगों को जमा नहीं किया था, यह तो बिल्कुल नयी बात है । संभवतया वह किसी प्रमुख घटना की सूचना देना चाहते हों । सभी स्तब्ध खड़े थे ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–'देखो ! मैं पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूं, तुम इसके नीचे हो ! मैं पहाड़ के दोनों ओर देख रहा हूं । अगर मैं यह कहूं कि एक सशस्त्र सेना दूर से आती दिखायी दे रही है, जो मक्का पर चढ़ाई करेगी, तो तुम उसे मान लोगे ?'

भीड़ ने एक स्वर से कहा–'निश्चय ही हम तुम्हारी बात मान लेंगे । तुम जैसे सच्चे और वादे के पक्के को हम भला झुठला सकते हैं ?'

लोगों की बेचैनी बढ़ गयी । वे चाहते थे कि जो कुछ मुहम्मद कहना चाहते हैं, जल्दी से कह दें । सशस्त्र सेना के आक्रमण की सूचना ने उनकी परेशानी और भी बढ़ा दी थी । मुहम्मद के मुख से कुरैश ने कभी ग़लत बात न सुनी थी । हर व्यक्ति आपकी सच्चाई को हृदय से स्वीकारता था । वह अच्छी तरह समझता था कि मुहम्मद अपने दिल से गढ़कर कोई बात कह ही नहीं सकते । निश्चित रूप से लुटेरों की कोई टोली मक्का पर छापा मारने के लिए आ रही है । अब मुहम्मद संभवतया इन आक्रमणकारियों से बचाव के लिए कोई उपाय सुझाएंगे । यह मात्र सच्चे और नेक ही नहीं, निर्भीक, वीर और धैर्यवान भी हैं और विवेकशील भी ।

इसके बाद आपने फ़रमाया–'यह तो समझाने के लिए एक उदाहरण था । तुम विश्वास करो कि मौत तुम्हारे सिर पर आ रही है और तुम्हें ख़ुदा के सामने हाज़िर होना है । ऐ कुरैश के लोगो ! जिस तरह तुम दुनिया और उसकी चीज़ों

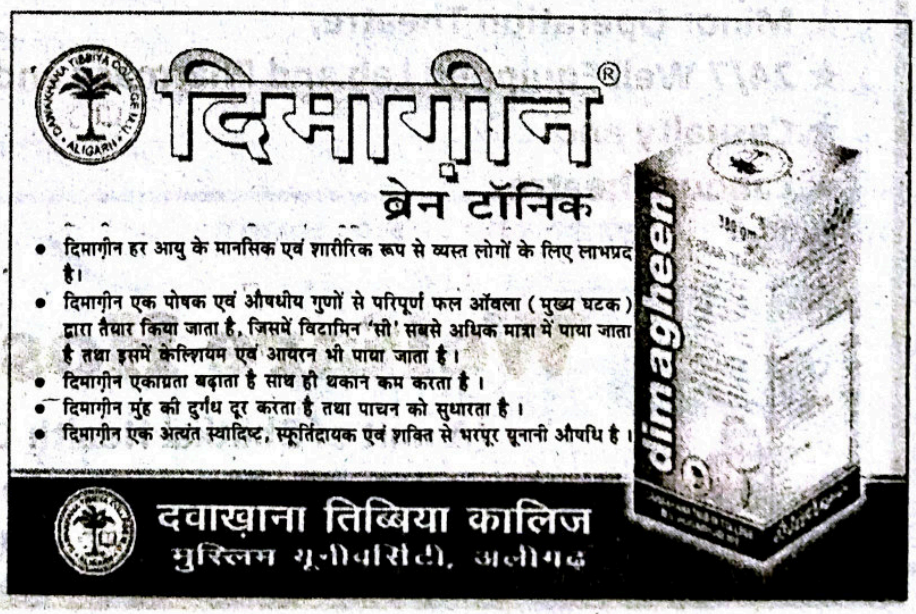

Required Doctors

(Urgently)

FOR WELL KNOWN AND WELL EQUIPPED 30 BEDDED HOSPITAL,

1. Female Gynaecologist. (M.D/M.S/DNB/DGO)
2. Paediatrician (M.D/DNB/DCH)
3. Physician (M.D/DNB)
4. Orthopaedic Surgeon (M.S/DNB)
5. Duty Doctors (MBBS)

Salary offered : Negotiable

FACILITIES AVAILABLE :

★ ICU,
★ CCU,
★ NICU,
★ Ortho Operation Theatre,
★ General OPeration Theatre,
★ Minor Operation Theatre,
★ 24/7 Well Equipped Lab and Pharmacy and X-Ray Unit,
★ Casualty and
★ Labour Theatre.

Welfare Hospital

(A unit of Bhatkal Health Care Ltd.)

Post Box No. 19, Sultan Street, Bhatkal, Karnataka-581 320

Contact : +91-9980564282, +91-9902105448

को देख रहे हो, उसी तरह मैं मरने के बाद की दुनिया को देख रहा हूं।'

मूर्तिपूजकों के लिए यह संदेश बिल्कुल अनोखा और विचित्र-सा था। उन्होंने कभी सोचा भी न होगा कि मरने के बाद का जीवन भी कोई चीज़ है, और इस लोक के जीवन के कर्मों पर वहां पकड़ भी होगी। उनके कवियों ने तो उनके मन में यह बात बिठा दी थी कि–'मिट्टी में मिलकर और फिर ज़िन्दा होना, यह क्या बेकार की बात है, दीवानों की-सी बात।' अबू लहब अपने गधे पर सवार था। खजूर की छड़ी से धरती की धूल उड़ा कर कहने लगा कि क्या इतनी-सी बात कहने के लिए इतने सारे लोगों को कष्ट देना था ? दूसरे लोग घरों को वापस हुए। आपस में कानाफूसी करते हुए कि अब्दुल्लाह के बेटे को यह क्या हो गया है कि एकाएकी लोगों को इकट्ठा करके एक ऐसी बात कही जिसे हमारे कानों ने आज तक नहीं सुना।

'तो क्या झूठा समझ लें हम मुहम्मद को ? उनके मुख से तो आज तक किसी ने ऐसी-वैसी बात सुनी ही नहीं थी।'–एक व्यक्ति ने कहा।

'मैं मुहम्मद को झूठा कब कह रहा हूं ? उन पर झूठ का लांछन कौन लगा सकता है ? वह तो सच्चों का सच्चा है...! पर भाई ! मैं समझता हूं कि उनकी वृद्धि में कुछ ख़लल आ गया है या प्रेत का साया पड़ गया है। यह भी हो सकता है कि बनी हाशिम के किसी दुश्मन ने उस पर जादू कर दिया हो, जिसके कारण अब्दुल मुत्तलिब का सच्चरित्र पोता ऐसी बहकी बातें करने लगा।' दूसरे व्यक्ति ने चलते-चलते जवाब दिया।

जितने मुंह उतनी बातें थीं। अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) के सत्य संदेश के नये-नये अर्थ निकाले जा रहे थे। अनुमान, अटकलें, भ्रांतियां या दुष्प्रचार–कोई-कोई यह भी कहता कि भाइयों, इतने सच्चे और भले आदमी की बात को इस तरह हंसी में उड़ा देना उचित नहीं। उसने कुछ सोच-समझ कर ही कहा होगा। अच्छे-भले व्यक्ति को 'दिमाग़ का चला हुआ' और 'प्रेत का मारा हुआ' कह देना बुद्धिमानों की नीति नहीं। जल्दी में किये गये निर्णय ठीक नहीं होते। ख़ूब जांच और परख लेना चाहिए।

सफ़ा पर्वत पर सत्य की इस घोषणा के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का प्रचार आरंभ हो गया। गली-कूचों और बाज़ारों में, सड़कों और चौराहों पर दूसरों तक अल्लाह का सन्देश पहुंचाते। मक्का ही क्या संपूर्ण अरब देश के सुनने वालों के लिए यह स्वर अनजाना और अनोखा था। लोग अच्छी और भली बातों से बिदकते थे। परम्परागत संकीर्णता और पैतृक धर्म सत्य को स्वीकार करने में रुकावट था कि हे, कहीं अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद की बातों में आकर अपने बाप-दादा के धर्म को न छोड़ बैठना। तुम्हारे पुरखे मूर्ख नहीं थे, तुम से अधिक बुद्धिमान और विवेकशील थे। उन्होंने सोच-समझ कर ही यह मार्ग अपनाया था। जिन ख़ुदाओं ने सदियों से तुम्हारी ज़रूरतें पूरी की हैं, जो तुम्हारे आड़े वक़्त पर काम आये हैं, उनसे इस तरह विमुख हो जाना आभार प्रदर्शन नहीं कृतघ्नता है। वीर पुरुषों का वचन एक होता है, जिसे एक बार 'महान' कह दिया, बस आजीवन उसकी महानता का सम्मान करते रहेंगे। इन विचारों और अंधविश्वासों ने अल्लाह के रसूल की आवाज़ को दिलों तक पहुंच-पहुंचकर वापस कर दिया।

सबसे पहले जिन भले लोगों को ईमान और इस्लाम स्वीकार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वे थे–

(1) मर्दों में सबसे पहले क़हाफ़ा के बेटे अबू बक्र।

(2) बच्चों में सबसे पहले अबू तालिब के बेटे अली।

(3) औरतों में सबसे पहले खुवैलिद की बेटी ख़दीजा।

(4) दासता मुक्त लोगों में सबसे पहले हारिसा के बेटे ज़ैद। और (5) दासों में सबसे पहले बिलाल हब्शी।

मारूफ़
शू पैलेस
जी०ई० रोड, बस स्टैंड, बी०एम०वाई०
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस०के० इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6535786

"जो लोग अपने माल अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, उनकी उपमा ऐसी है, जैसे एक दाना बोया जाए, जिससे सात बालें निकलें और प्रत्येक बाल में सौ दानें हों।" (क़ुरआन)

SEAHATH CANNING COMPANY

Manufacturer & Exporters of Canned Fish



Website
www.seahathcanning.com

Manager - Marketing
ANEES MOHAMMED

Factory/office: Plot No. 8, Margao Industrial Estate,
St. Jose de Areal, P.O Curtorim - 403 709. SALCETTE - GOA (INDIA)
E-mail: seahath@gmail.com
Ph:0832-2860342(F),6481948(R),Cell: No.: 9225902984,Tele Fax: 0832-2860412

लोक-परलोक के सुधारक : हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

■ हीरा लाल कर्दम
(हापुड़, ग़ाज़ियाबाद)

वास्तव में मानव का विकास विज्ञान के माध्यम से सदैव होता रहता है और नये-नये अन्वेषण सामने आते रहते हैं । परंतु फिर भी मानव को कभी पूर्ण नहीं कहा जा सकता । अलौकिक सत्ता को ऊंचा मानकर अपने को दासता के रूप में मानना ही मनुष्य के हित में है । कोई नहीं जानता कि कितनी संस्कृतियां अब तक दफ़न हो चुकी हैं । मुख्यत: वैदिक संस्कृति, मिस्र संस्कृति, चीन संस्कृति अतिप्राचीन संस्कृतियों में मानी जाती हैं । प्राचीन युग में भी मानव धार्मिक था और आज के युग में भी मानव धार्मिक है । परन्तु किसी भी धर्म की धार्मिकता यदि उस देश एवं काल के मनुष्यों के लिए परोपकारी एवं कल्याणकारी है तो, वह धर्म कहीं अधिक टिक सकता है, अन्यथा शीघ्र ही दम तोड़कर लुप्त हो जाता है ।

कब तक हम आधुनिक वैज्ञानिक विकसित मानव पीढ़ी को धोखें में रखेंगे ? एक न एक दिन पोल खुल ही जाएगी । यदि प्रचलित सभी धर्मों का हम गहनता से अध्ययन एवं चिंतन-मनन करते हैं तो सर्वप्रथम वैदिक (हिन्दू धर्म) अपने मुख्य तीन भगवानों ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा करोड़ों देवी-देवताओं को अपना आराध्य मानकर उनकी पूजा में लगा रहता है । क्या इस समुदाय का कल्याण हुआ है ? अब हम ईसाई धर्म की ओर जाते हैं, तो ज्ञात होता है कि ईसाई धर्म के लोग तीन खुदाओं पर विश्वास करते हैं–(1) खुदा (2) खुदा का बेटा (3) रूहुलकुदुस (पवित्र आत्मा) ही दोषी को, दोष मुक्त कर देते हैं । चाहे ननों के साथ ही अनाचार किया गया हो ? क्या तीन खुदाओं को मानने वाला पादरी हमें कल्याण का मार्ग दिखा सकता है ?

अब ज़रा जैन धर्म पर गंभीरतापूर्वक विचार करें, तो पाएंगे कि इस धर्म में भी अलग-अलग विचारधाराओं का प्रभुत्व है । दिगाम्बर एवं पिताम्बर, ईश्वरवाद न मानकर बाद के समय में एक शाखा महावीर को नग्नता के प्रतीक रूप में मान्यता देती दिखायी पड़ती है । क्या इस नग्नता से मानव कल्याण संभव है ? अब प्रश्न रहा बौद्ध धर्म का बौद्ध धर्म में भगवान के लिए कोई स्थान नहीं है । बौद्ध धर्म के अनुयायी भाग्य और भगवान पर लेशमात्र भी विश्वास नहीं करते हैं । 'तथागत गौतम बुद्ध' ने कहा है–"अप: दीपों भव:" अर्थात "अपना दीपक स्वयं बनो ।" मानव को वह कार्य करने चाहिए जो बहुत लोगों के हित के हों तथा सुख के हों अर्थात 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय ।'

अब हम इस्लाम धर्म की ओर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं–"ला-इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" आख़िर क्या है यह ? आओ इसका पता लगाएं कि इस कलिमा का क्या अर्थ है । इस वाक्य का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट है । ला+इलाहा+इल्लल्लाह, जिसका शाब्दिक अर्थ यह है । ला=नहीं इलाह=पूजनीय, इल्ला=अतिरिक्त, अल्लाह=ईश्वर । इसका भवार्थ है कि अल्लाह अर्थात ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी पूज्यनीय नहीं है । "मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह", इसका भावार्थ है कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं । अर्थात पैग़म्बर, पैग़ाम पहुंचाने वाला, मात्र ईशदूत है, पूजनीय नहीं है । आओ हम इस्लाम धर्म पर मानवजाति हेतु चिंतन, मनन करें और ज्ञात करें कि क्या वास्तव में इस्लाम धर्म मानवहितकारी एवं कल्याणकारी धर्म है ? आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व मानव समाज बड़ी भारी संख्या में अपने स्वामी जगत स्रष्टा ईश्वर से भटक कर बहुत दूर हो गया था । इसलिए ईश-भक्त हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) को अवतरित किया गया । जिससे भटके हुए मानव समाज को उसके वास्तविक पालनहार से परिचित कराये, जिससे लोक व परलोक में मुक्ति के द्वार खुल जाएं और उसे मोक्ष प्राप्त हो सके ।

सच्चाई यह है कि यदि संसार के समस्त वृक्षों की क़लम बनायी जाए और समस्त समुद्रों की स्याही बनाकर अल्लाह के द्वारा बताये गये सिद्धांत, नियम, क़ानून प्रणाली, सांसारिक सुविधाएं, सुव्यवस्थित, सुसंगठित, जीवन जीने का सुमार्ग तथा पारलौकिक स्वर्ग प्राप्त करने का सरल मार्ग के लिए ईश्वर-अल्लाह की प्रशंसा एवं उपकार को हम सब मिलकर लिखें, तो भी पूर्ण नहीं कर सकते । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) ने मानवजाति को संगठित कर एक उद्घोष (नारा) दिया–'सभी मनुष्य आपस

में भाई-भाई हैं, कोई किसी से उच्च या नीच नहीं है ।' वे इन्सानियत के रहनुमा थे जिन्हें किसी भी मूल्य पर नहीं भुलाया जा सकता ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा–ऐ लोगों, जिस प्रकार तुम अपने माता-पिता का कहना मानकर उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं करते, ठीक उसी प्रकार से जो तुम्हारे माता-पिता एवं समस्त संयार को बनाने वाला अल्लाह है, तो उसकी आज्ञा की अवहेलना क्यों करते हो ? क्या तुम्हें मरना नहीं है ? क्या तुम मरने के बाद पुन: जीवित न किये जाओगे ? क्या तुम्हें अपने किये गये कुकृत्यों के फल नहीं मिलेंगे ? सोचो और गंभीरता से विचार करो और एक अल्लाह के बताए मार्ग पर चलकर लोक-परलोक सुधारो, तब ही तुम्हारा कल्याण संभव है ।

अंतिम सन्देष्टा अर्थात इस्लाम के ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया कि तुम्हें अपने पड़ोसी का प्रत्येक क्षण विशेष ध्यान रखकर सहयोग करना चाहिए । यदि तुम्हारा पड़ोसी भूखा है, तो तुम्हारा खाना-पीना अनुचित है । आपने बताया कि, ऐ लोगों, व्यभिचार से बचो, प्रत्येक नशीले पदार्थ से सदैव दूर रहो, अमानत में ख़यानत कदापि न करो, ब्याज लेने और देने का त्याग करो, झूठ, चोरी, छल-कपट, बेईमानी तथा वस्तु कम तोलना जैसे कुकृत्य से बचते रहो और ईश्वर के अवतरित पवित्र धार्मिक ग्रंथ कुरआन का गंभीरता से अध्ययन- मनन करते हुए प्रयोग में लाओ । तब ही तुम सबका कल्याण सुनिश्चित है । अन्यथा तुम सब उस दहकती आग में झोके जाओगे, जिसका कोई अंत नहीं होगा ।

कौन नहीं जानता है कि ईशदूत के यह भी मधुर वचन हैं कि मानव को उपकार का बदला उपकार से चुकाना चाहिए । मज़दूर का पसीना सूखने से पहले उसे मज़दूरी दे दो । जिससे वह समय से अपना जीवन व्यतीत कर सके । ब्याज एक कलंक है, जो किसी की मजबूरी का लाभ उठा कर प्राप्त किया जाता है । चाहे वह देश की सरकार को दिया गया ऋण हो अथवा किसी व्यक्ति को दिया गया ऋण हो । ब्याज लेना व देना इस्लाम में बिल्कुल अनुचित है जबकि अन्य किसी धर्म में ऐसा देखने को नहीं मिलता । इस्लाम धर्म नशीले पदार्थों पर प्रतिबंध ही नहीं लगाता अपितु उल्लंघन करने वाले को दंडित भी करता है । यह इस्लाम धर्म की विचित्र विशेषता है ।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस्लाम धर्म में न तो महिलाओं को नचाया जाता है और न ही उन्हें जुआ में दांव पर लगाया जाता है । न उन्हें नग्न कर सार्वजनिक रूप से गांवों में घुमाया जाता है । न उन्हें दहेज के नाम पर ज़िन्दा जलाया जाता है, न ही देवदासी बनाया जाता है, न ही विषकन्या बनाया जाता है और न ही भोग के लिए विवश किया जाता है । बल्कि इस्लाम धर्म में महिलाओं का उत्पीड़न, हनन, दमन कदापि सहन नहीं किया जाता और औरत को परदे में रखने का नियम एवं कठोर क़ानून है । इस्लाम कहता है कि–"जितना जुल्म करने वाला गुनाहगार है, उतना ही गुनाहगार जुल्म सहने वाला होता है । निस्संदेह

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रात: 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रात: 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें–

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

उक्त तथ्य प्रकाश में लाने वाले मानवता के पक्षधर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा बताया गया क़ानून लोक कल्याणकारी है । इस सच्चाई को उजागर करना तथा ''प्यारे नबी'' के निर्देश का पालन करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व बनता है ।

किससे छिपा है कि इस्लाम धर्म के पवित्र धार्मिक ग्रंथ कुरआन में जो कुछ वर्णित आदेश आया है वह सब कुछ मानवता के प्रेमी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने लोगों को कह सुनाया है तथा स्वयं उस मार्ग पर चलकर स्वयं को आदर्श उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया । जो कि सम्पूर्ण संसार में अद्वितीय उदाहरण है । जिन-जिन लोगों ने उनको देखकर, सुनकर अपने जीवन में विशाल एवं अद्‌भुत परिवर्तन करके जीवन व्यतीत किया आज वे पूर्वज प्रतिष्ठित माने जाते हैं और आज नर-नारी उनका यशोगान करते नहीं थकते ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का अंतिम संदेश है कि, ऐ लोगों, जो अल्लाह का हुक्म मुझ तक आया है, मैंने उस हुक्म को तुम तक पहुंचा दिया है । तुम गवाह रहना, अब तुम्हारा फ़र्ज़ बनता है कि तुम भी इस अल्लाह के आदेश को दूसरों तक पहुंचाओ, अन्यथा तुम्हारी पकड़ होगी । जब लोगों ने प्यारे नबी (सल्ल०) के मुख से मधुर वचन सुने तो, जो जिस-जिस दिशा की ओर खड़े थे या बैठे थे, वे उसी दिशा की ओर संसार में फैल गये और नबी (सल्ल०) का संदेश सुनाते गये । जिसका सुखद परिणाम यह निकाला कि लाखों करोड़ों की संख्या में लोग ईमान वाले हो गये तथा अल्लाह पर और कुरआन पर विश्वास करने लगे ।

एक हदीस में आया है कि नबी (सल्ल०) का वचन है कि, ऐ लोगों तुम एक ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास रखो, ''मैदान-ए-हश्र'' (वह स्थान जहां मरने के बाद जीवन में किये गये कर्मों का हिसाब होगा) में कोई किसी का नहीं होगा । सब अपने किये गये कर्मों का फल पाएंगे । एक दिन नबी (सल्ल०) ने अपनी प्रिय पुत्री फ़ातिमा से कहा–बेटी फ़ातिमा तुझे नबी की बेटी होना काम नहीं आएगा, तू खुदा के रास्ते को अपना ले और उस पर अमल कर वही तेरे काम आएगा । पृथ्वी और आकाश पर राज्य अल्लाह का है । वही जीवित रखता है, वही मारता है अल्लाह से हटकर न तेरा कोई दोस्त होगा, न कोई रिश्तेदार, न सहायक ।

मेरे विचार से अल्लाह के आदेश का वास्तविक नाम पवित्र कुरआन है । अर्थात कुरआन मजीद अर्थात कुरआन हकीम अर्थात जो हिकमत से भरपूर है । कुरआन करीम अर्थात कल्याणकारी मार्गदर्शक, कुरआन पाक अर्थात यह ग्रंथ बिल्कुल पवित्र है । इसमें समानता, बंधुत्व, करुणा, मैत्री, भाईचारा, मानव को जीवन व्यतीत करने हेतु अति उत्तम उपदेश एवं निर्देश देता है । वे सौभाग्यशाली है, जो निस्स्वार्थ मिलकर इस आदेश एवं निर्देश को जोकि मुहम्मद (सल्ल०) के मुख से निकले मधुर वचनों को दूसरों तक पहुंचाने के शुभ कार्य में जुटे हुए हैं । जिससे सम्पूर्ण संसार परिचित हो जाए कि इस्लाम के आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) वास्तव में इन्सानियत के रहनुमा थे । पृथ्वी पर आज तक के इतिहास में ऐसा कोई पैग़म्बर नहीं पैदा हुआ है, जिसमें अल्लाह के पैग़ाम अर्थात मानव के कल्याणकारी पैग़ाम को इतने प्रभावी ढंग से फैलाया हो जितना अकेले हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फैलाया ।

Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

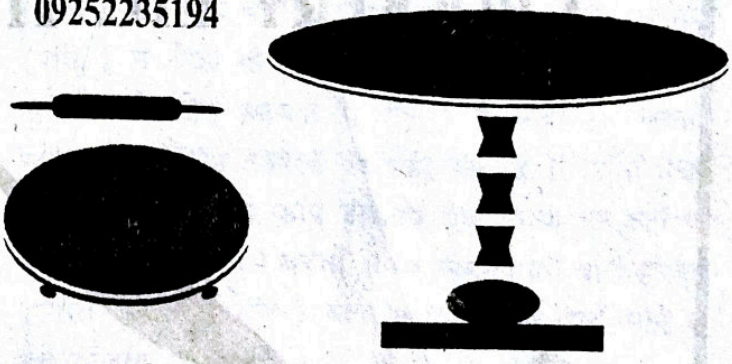

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारे तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

S. Riyaz Khadri

RIYAZ DECORATORS

Tel. : (o) 2519501, 6970673 (R) 2517612
Rax : 2517992 (Mob.) 9422060878, 9423888457

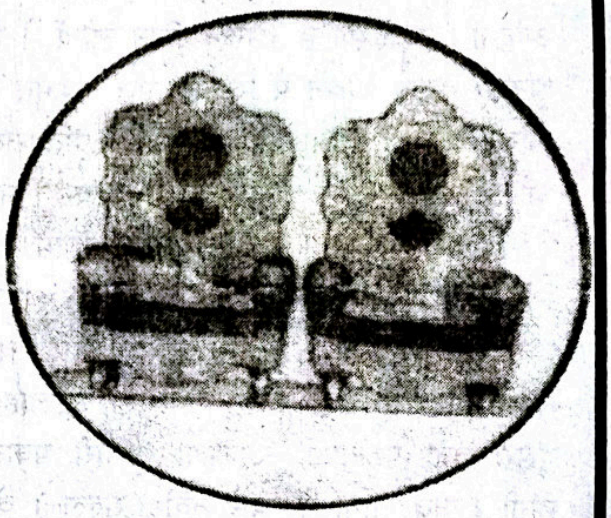

ON HIRE
SHAMIYANA PANDAL
SOUND SYSTEM
LIGHTING, CHAIRS,
TABLE AND
CROCKERY ETC. ITEMS

Off. : Shop No. 4, Navprasth Estate
Near Kharpreshwar Mandir,
Patrong Baina, Vasco-da-Gama
Goa-403802

Res. : Fire Wood Depot
Sasmolem Baina
Vasco-da-Gama
Goa-403802

हज़रत ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि०)

❖ तालिब हाशमी

रबीउल अव्वल सन 11 हिजरी में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जाने का समय क़रीब आया तो आप (सल्ल०) ने अपनी प्यारी बेटी हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) से कहा कि अपने बच्चों को बुला लाएं । हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) अपने तमाम बच्चों को अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास ले गयी । बच्चों ने अपने नाना को बेचैन देखा तो फफक कर रोने लगे । उन्हीं बच्चों में से एक 6 वर्ष की बच्ची को तो इतना सदमा हुआ कि उसने आप (सल्ल०) के मुबारक सीने पर अपना सिर रख दिया और सिस्कियां भरने लगीं । आप (सल्ल०) ने उस बच्ची की पेशानी चूमी और सहानुभूति भरा हाथ उसके सिर पर फेरा और दिलासा दिया ।

यह वही बच्ची थी जो 6 साल पहले हज़रत अली (रज़ि०) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के घर पैदा हुई थी । उस समय आप (सल्ल०) मदीना मुनव्वरा में मौजूद नहीं थे । तीन दिनों के बाद आप (सल्ल०) मदीना तशरीफ़ लाए तो सीधे हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के घर गये, बच्ची को गोद लिया और बहुत देर तक रोते रहे ।

आप (सल्ल०) ने उस बच्ची का नाम "ज़ैनब" रखा और कहा, "यह हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की हमशकल है ।"

6 साल के बाद वही ज़ैनब अपने नाना से हमेशा के लिए बिछड़ रही थी । उस मासूम जान के लिए यह एक बहुत बड़ी घटना थी, लेकिन उसे क्या ख़बर थी कि भविष्य में उस पर इतनी मुसीबतें आएंगी कि उसे "उम्मुल मसाएब" कहा जाने लगेगा ।

हज़रत ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि०) इस्लामी इतिहास की एक महान शख़्सियत हैं । वह जिस घराने में पैदा हुईं वह दुनिया का सबसे बेहतरीन घराना था । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) आपके नाना, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) आपकी नानी, हज़रत अली (रज़ि०) आपके पिता और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) आपकी मां थीं । सैयदना हज़रत हसन (रज़ि०) और सैयदना हज़रत हुसैन (रज़ि०) आपके भाई थे । हज़रत जाफ़र तैयार (रज़ि०) आपके चचा थे ।

सन 5 हिजरी में जमादी उल-अव्वल के महीने में आपका जन्म हुआ । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने स्वयं उनका नाम ज़ैनब रखा । 'उम्मुल हसन' या 'उम्मे कुल्सुम' के नाम से मशहूर हुईं । लेकिन करबला की घटना के बाद उन्हें लोग "उम्मुल मसायब" के नाम से पुकारने लगे ।

इनका लालन-पालन किस ढंग से हुआ उसकी कुछ बानगी सुनिये :

(अ) हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) अपने बचपने के दिनों में एक दिन कुरआन मजीद पढ़ रही थीं । बेख़्याली में सिर से ओढ़नी खिसक गयी । हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) ने देखा तो प्यार से उनके सिर पर ओढ़नी डाल दी और कहा, "बेटी, अल्लाह का कलाम बिना सिर नहीं पढ़ते ।"

(ब) एक दिन हज़रत हुसैन (रज़ि०) और हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) में किसी बात पर लड़ाई हो गयी । हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) ने देखा तो दोनों बच्चों को कुरआन की आयतें सुनायीं और उन आयतों की रौशनी में कहा : "बच्चो, लड़ाई से अल्लाह तआला नाराज़ हो जाता है ।" दोनों बच्चे अल्लाह के भय से कांप उठे और प्रण किया कि भविष्य में कभी नहीं लड़ेंगे । बच्चों के इस संकल्प की बातें सुनकर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) बहुत खुश हुईं और उन्हें सीने से लगा लिया ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) का बहुत प्यार करते थे । कई बार आप हज़रत हसन (रज़ि०) और हज़रत हुसैन (रज़ि०) के भांति अपने नाना के पीठ पर चढ़कर सवारी कर लिया करती थीं जब आप (सल्ल०) हज्जतुल विदाअ के लिए मक्का तशरीफ़ ले गये तो नन्हीं ज़ैनब भी उनके साथ थी । उस समय जब केवल 5 वर्ष की थी ।

सन 11 हिजरी में आप (सल्ल०) इन्तिक़ाल फ़रमा

T. Naqash

Mob. : 9890839088



BOMBAY GARMENTS

Arihant Plaza,
Shop No. 9,
Near Fish Market,
Vasco-da-gama, Goa

Ph. : 0832 (s) 2510009

गये । 6 माह के बाद हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) भी चल बसीं । मां और नाना की जुदाई से हज़रत ज़ैनब निढ़ाल हो गयीं । बच्चों के लालन-पालन की ज़िम्मेदारी स्वयं हज़रत अली (रज़ि॰) ने संभाल ली ।

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने अपने पिता के ज्ञान और अन्य विशेषताओं से भरपूर फ़ायदा उठाया और जल्द ही बुद्धि एवं विवेक, हक़गोई और बेबाकी, इफ़्फ़तो-इस्मत और इबादत व शबबेदारी में अपनी मां हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) के समान हो गयीं ।

लंबा एवं छड़हरा शरीर, मुखमंडल पर अपने नाना का जलाल और चाल-ढाल में अपने पिता हज़रत अली (रज़ि॰) की झलक हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) की शख़्सियत को और भी निखार रही थी ।

सभी इतिहासकार इस बात पर सहमत हैं कि इल्म व फ़ज़्ल में केवल बनू हाशिम ही नहीं बल्कि तमाम क़ुरैश में कोई लड़की हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) की बराबरी नहीं कर सकती थी ।

(2)

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) जब युवावस्था को पहुंचीं तो अनेक रिश्ते आने लगे जिनमें कुन्दा क़बीले के मशहूर रईस अशअस बिन क़ैस भी शामिल थे । लेकिन हज़रत अली (रज़ि॰) ने अपनी बेटी के लिए हज़रत जाफ़र तय्यार बिन अबी तालिब (रज़ि॰) के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) को पसन्द किया और अपनी बेटी हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) का निकाह बहुत ही सादे तरीक़े से हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) के साथ पढ़ा दिया ।

उस समय हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) की आयु ग्यारह या तेरह वर्ष थी । निकाह के बाद परिवार की महिलाओं ने उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) के घर पहुंचा दिया । हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि॰) उस समय व्यापार करते थे ।

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) का वैवाहिक जीवन बहुत ही सुखद था । वे अपने पति की ख़ूब सेवा किया करती थीं । हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) भी उनकी दिलजोई में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती थीं । यद्यपि घर में सेवक/सेविकाएं सभी थीं लेकिन वे घर का अधिकांश काम स्वयं किया करती थीं । हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि॰) अक्सर कहा करते थे : "ज़ैनब बेहतरीन घर वाली हैं ।"

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) का हाथ बहुत खुला हुआ था । ग़रीबों और मुहताजों की दिल खोलकर मदद किया करते थे । हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) की बेटी भी उसी रंग में रंगी हुई थी । यह असंभव था कि कोई ज़रूरतमंद उनके द्वार पर आये और ख़ाली हाथ चला जाए या किसी के मुसीबत की उन्हें ख़बर हो और वे उनके घर हाल-चाल पूछने न पहुंचे ।

एक बार हज़रत हुसैन (रज़ि॰) ने हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) को टोकते हुए कहा :

"ऐ मेरे चचा के बेटे ! तुम बहुत असराफ़ से काम लेते हो और ऐसे लोगों को भी अपनी कमाई में शरीक कर लेते हो जो उसके मुस्तहिक़ नहीं होते ।"

हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि॰) ने जवाब दिया : "भाईजान ! क्या करूं ? सायेल को देखकर दिल क़ाबू में नहीं रहता । अल्लाह ने मुझे यह धन इसी लिए दिया है कि उसे अपने बन्दों में बांटूं ।"

पति के घर में दौलत की रेल-पेल हज़रत ज़ैनब के मिज़ाज में कोई बदलाव नहीं ला सकी और वह धैर्य-संयम, सादगी और जफ़ाकशी का पीकर बनी रहीं । (जारी)

Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877



Hosiery Centre

Wholeseller

Readymade & Handloom

B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G.)

भारतीय सन्दर्भ में राष्ट्रवाद : एक विवेचन

❖ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

हिन्दुत्व वेद के इस मंत्र को वैदिक राष्ट्रगीत क़रार देता है :

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् ।
आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् ।
दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा ।
जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु
फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् ।
योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।

(यजुर्वेद संहिता, 22-22)

यानी ब्राह्मण हमारे राष्ट्र में तेजवान और व्रतधारी होते रहें, क्षत्रिय भी शास्त्र चलाने में कुशल और शूरमां होते रहें । वे हमेशा महारथ शत्रुनाशक और शत्रुभेदक हों, गायें दुधारू हों और राष्ट्र में सुख-संपदा हो, ताक़तवर बैल हों जो भारी बोझ वहन करें, घोड़े तेज़ दौड़ें ख़तरनाक रास्ते में भी और वे रथों को खींचकर विजय दिलायें, औरतें सती, सद्गुणी और सुन्दरी हों, रथ पर सवार वीरों को विजय प्राप्त हो, यजमान (ब्रह्मण) को ऐसे बेटे प्राप्त हों जो शत्रुनाशक, सभ्य और सामर्थ्यवान हों । फल और औषधि ख़ूब हो और स्वयं पक जाए और समय-समय पर बारिश हो और हमारा योग-क्षेम (कल्याण) हो ।

यह अनुवाद पंडित श्रीराम शर्मा रूंथला और 'राम' के अनुवाद पर आधारित है । रूंथला जी ने 'वैदिक राष्ट्रगीत' नामक पुस्तिका में इसका पद्यानुवाद किया है, जबकि 'राम' ने भी 'क़ल्याण' के हिन्दू संस्कृति विशेषांक में पृ॰ 2 पर पद्य में ही अनुवाद किया है ।

यजुर्वेद के इस मंत्र के भावार्थ से मिलती-जुलती बात वाजसनेयी संहिता (22-22), तैत्तिरीय संहिता (7-5-18) और तैत्तिरीय ब्राह्मण (3-8-13) में भी आयी है ।

ऐतरेय ब्राह्मण (38-3) ने भारतवर्ष को पांच भागों में बांटा है : पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर और मध्य । पुराणों, स्मृतियां और दूसरी पुस्तकों में भारतवर्ष को आर्यावर्त भी कहा गया है । लेकिन इसकी आबादी को लेकर स्मृतिकारों (स्मृति के लिखने वालों) में मतभेद है । मनु (7-69) के अनुसार देश में केवल आर्य हों, लेकिन दूसरी जगह मनु (8-22) यह भी कहते हैं कि 'जिस देश में शूद्र अधिक हों, जहां नास्तिकों की तादाद ज़्यादा हो और द्विज (ब्राह्मण क्षत्रिय) बिल्कुल न हो, वह राष्ट्र व्याधियों और निर्धनता में ग्रस्त होकर तबाह हो जाता है । यही बात मत्स्य पुराण (217-1/5), विष्णु धर्मोत्तर (2-26-1/5), और नीति वाक्यामृत (जनपद समुद्देश, पृ॰ 19) और कुछ और पुस्तकों में आयी है । मत्स्य पुराण और विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कहा गया है कि राष्ट्र में इन गुणों और विशेषताओं का पाया जाना मुमकिन नहीं है, अतः राजा को चाहिए कि वह जो कुछ प्राप्त है उसका सर्वोत्तम उपयोग करे । पुराणों में भारतवर्ष की महत्ता बहुत खुलकर आयी है ।

राष्ट्र क्या है ?

आगे बढ़ने से पहले यह जान लेना ज़रूरी है कि राष्ट्र शब्द जो उपर्युक्त वेद-मंत्र में आया है, उसका अर्थ क्या है ? इसका मतलब जानकर ही हम 'राष्ट्र' शब्द का अर्थ भी निश्चित कर सकेंगे । ऋग्वेद (4-42-1) में आया है : 'मम द्विता राष्ट्र क्षत्रियस्य' यानी मेरा राष्ट्र दोनों ओर या दोनों गोलकों में है । ऋग्वेद (7-34-11) ही में आया है कि राष्ट्र का स्वामी वरुण है । इस वेद में 7-84-2, 10-109-3 हवालों के मंत्रों में 'राष्ट्र' शब्द का इस्तेमाल हुआ है ।

साम्प्रदायिकता और राष्ट्रवाद

भारत में राष्ट्रवाद का सही मानी में उदय 17-18वीं सदी में महाराष्ट्रियों और सिखों के ज़रिये हुआ । वैसे चक्रवर्ती राजा, जो कि सारी दुनिया पर हुकूमत करे, की कल्पना वेद और पुराणों में मिलती है, लेकिन उसमें राष्ट्रीयता का तत्व नहीं पाया जाता । भारत में राजनीतिक आज़ादी हासिल करने की जो राष्ट्रवादी कोशिशें हुईं, उसने देश में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया । ये कोशिशें हिन्दू धर्म के पुनर्जागरण के साथ हुईं, जिसे हिन्दुत्व ने आगे चलकर हिन्दू राष्ट्र के रूप में बदलना चाहा ।

ऋग्वेद के इन मंत्रों के अध्ययन से ऐसा महसूस होता है कि 'राष्ट्र' शब्द से मुराद सारी दुनिया है । ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ 'ऐतरेय ब्राह्मण' में आया है :

'पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराट् ।'

यानी 'समुन्दर तक जितनी सब ज़मीन है, उस पर एक ही राजा का शासन हो ।' 'ख़लीफ़ा' शब्द के भावार्थों में यह भावार्थ भी शामिल है । ऋग्वेद (8-37-3) में इन्द्र को एकराट भी कहा गया है । इसी ब्राह्मण (39) में 'सार्वभौम' लफ़्ज़ आया है, जिसका मतलब पाणिनि (5-1-41/42) ने 'सारी ज़मीन का मालिक' बताया है । ऋग्वेद (6-68-9 और 8-16-1) में वरुण और इन्द्र को सम्राट कहा गया है और 'साम्राज्य' शब्द भी इसी वेद (1-25-10) में मिलता है । डॉ॰ पी॰वी॰ काणे के अनुसार, "लगता है ऋग्वेद काल में एकछत्र राजा की कल्पना हो चुकी थी ।"

काफ़ी संभव है कि राष्ट्र का वसी महफ़ूम धीरे-धीरे सिकुड़ता गया और वह एक ख़ास क़िस्म के आकार-प्रकार वाला भू-क्षेत्र बन गया । इसके भावार्थ को समेटने के पीछे हिन्दुत्व का उद्देश्य भी निहित हो सकता है, क्योंकि पूरी दुनिया को एक साथ आर्य या हिन्दू देश या राष्ट्र तो बनाया नहीं जा सकता–लिहाज़ा इसके लिए आरंभिक तौर पर किसी भू-क्षेत्र को अपना कार्य क्षेत्र बनाया जाना ज़्यादा संभव है । शायद इसी उद्देश्य के तहत ज़मीन को मां कहा गया । अथर्ववेद (12-1-8) में है : पृथ्वी (ज़मीन) मां है । उसका आह्वान किया गया है कि वह राष्ट्र को बल और दीप्ति दे । वैसे यह तो निश्चित है कि प्राचीन भारत में आधुनिक राष्ट्रीयता की भावना नहीं थी ।

स्मृतियों, धर्मसूत्रों और पुराणों में राष्ट्र को एक सीमित दायरा दिया गया और राष्ट्र से तात्पर्य भारतवर्ष नाम का देश बताया गया । अमरकोश में है भी कि राष्ट्र, देश, 'विषय' और 'जनपद' एक-दूसरे के पर्यायवाची हैं, लेकिन इस पर विद्वान एकमत नहीं हैं ।

अग्नि पुराण (239-2) के मुताबिक़ राज्य के सभी अंगों में राष्ट्र सर्वश्रेष्ठ है । विष्णु पुराण (2-3-2) और ब्राह्म पुराण, मार्कण्डेय पुराण और दूसरे पुराणों ने भी भारतवर्ष को कर्म भूमि माना है । और लिखा है कि यह वह देश है जहां स्वर्ग व मोक्ष के अभिकांक्षी बसते हैं । शंख लिखित (याज्ञवल्क्य 1-2 की टीका में) का कहना है कि आयर्वित देश उच्च गुणों से परिपूर्ण, पुरातन और पूत (पाक) है।

ऐतरेय ब्राह्मण (38-3) ने भारतवर्ष को पांच भागों में बांटा है : पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर और मध्य । पुराणों, स्मृतियां और दूसरी पुस्तकों में भारतवर्ष को आर्यावर्त भी कहा गया है । लेकिन इसकी आबादी को लेकर स्मृतिकारों (स्मृति के लिखने वालों) में मतभेद है । मनु (7-69) के अनुसार देश में केवल आर्य हों, लेकिन दूसरी जगह मनु (8-22) यह भी कहते हैं कि 'जिस देश में शूद्र अधिक हों, जहां नास्तिकों की तादाद ज़्यादा हो और द्विज (ब्राह्मण क्षत्रिय) बिल्कुल न हो, वह राष्ट्र व्याधियों और निर्धनता में ग्रस्त होकर तबाह हो जाता है । यही बात मत्स्य पुराण (217-1/5), विष्णु धर्मोत्तर (2-26-1/5), और नीति

वाक्यामृत (जनपद समुद्देश, पृ॰ 19) और कुछ और पुस्तकों में आयी है। मत्स्य पुराण और विष्णु धर्मोत्तर पुराण में कहा गया है कि राष्ट्र में इन गुणों और विशेषताओं का पाया जाना मुमकिन नहीं है, अत: राजा को चाहिए कि वह जो कुछ प्राप्त है उसका सर्वोत्तम उपयोग करे। पुराणों में भारतवर्ष की महत्ता बहुत खुलकर आयी है।

अत: उपर्युक्त विवरणों से यह बात सामने आयी कि राष्ट्र को जो एक व्यापक और व्यावहारिक भावार्थ वाला था, हामिल था, एक ख़ास आकार-प्रकार के भू-क्षेत्र तक समेट दिया गया। छोटे-छोटे राज्यों को भी राष्ट्र माना जाने लगा, जैसे पल्लव, वाकाटक या गहरवाल भी अपने को राष्ट्र कहते थे। 1674 ई॰ में शिवाजी ने कई छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर उसे महाराष्ट्र नाम दिया था। हिन्दुत्व ने तो इसे एक जाति तक सीमित कर दिया और कहा हिन्दू एक राष्ट्र हैं।

राष्ट्रवाद क्या है ?

इस राष्ट्र के प्राप्ति के लिए जो चीज़ें अंजाम पाती हैं और जो तरीक़े या कोशिशें संकल्पबद्ध होकर की जाती हैं, उसे राष्ट्रवाद का नाम दिया जाता है। Oxford Dictionary (Page 570 में Nationalism का मानी (1) किसी का अपने राष्ट्र के प्रति सख़्त समर्पण, देशभक्ति भावना, कोशिशें, उसूल (2) राजनीतिक आज़ादी के लिए मुहिम। यहां यह बातें साफ़ कर देना ज़रूरी है कि Nationalism का अर्थ पृष्ठभूमि के दृष्टिकोण से राष्ट्रवाद से थोड़ा-सा हटा हुआ है, जो राष्ट्र के मतलब से स्पष्ट हो जाता है। भारत में राष्ट्रवाद का सही मानी में उदय 17-18वीं सदी में महाराष्ट्रियों और सिखों के ज़रिये हुआ। वैसे चक्रवर्ती राजा, जो कि सारी दुनिया पर हुकूमत करे, की कल्पना वेद और पुराणों में मिलती है, लेकिन उसमें राष्ट्रीयता का तत्व नहीं पाया जाता। भारत में राजनीतिक आज़ादी हासिल करने की जो राष्ट्रवादी कोशिशें हुईं, उसने देश में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया। ये कोशिशें हिन्दू धर्म के पुनर्जागरण के साथ हुईं, जिसे हिन्दुत्व ने आगे चलकर हिन्दू राष्ट्र के रूप में बदलना चाहा।

डॉ॰ दीनानाथ वर्मा लिखते हैं : "हिन्दू धर्म के आन्दोलनों में निकट संबंध था और उनका राष्ट्रीय चेतना के विकास में बड़ा योग रहा। ब्रह्म समाज ने सोते भारत को जगाया। केशवचन्द्र सेन के नेतृत्व में ब्रह्म समाज ईसाइयत के रंग में रंग गया था, अत: आर्य समाज ने भारतीयों को उसके कुप्रभाव से बचाया, परन्तु आर्य समाज ने अन्य धर्मावलंबियों के प्रति उग्रता का रुख़ अपनाया। रामकृष्ण मिशन और थियोसाफ़िकल समाज ने सभी धर्मों की एकता पर बल दिया। थियोसाफ़िकल समाज के प्रभाव से दूसरे धर्म के मानने वाले भी राष्ट्रीयता की ओर खिंचे। यद्यपि ये धर्म-सुधार आन्दोलन प्रधानत: धार्मिक थे, फिर भी इन्होंने देशाभिमान और देशभक्ति के भाव जगाकर राष्ट्रीय चेतना को विकसित किया। साथ ही इन्होंने पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रति निन्दा की भावना जगायी।"

("भारत में उपनिवेशवाद तथा राष्ट्रवाद", पृ॰ 113)

इसी कारण से सर वेलेंटाइन शिरोल ने हिन्दू धर्म के पुनर्जागरण में राष्ट्रीयता की उत्पत्ति देखी। फ़र्कुहर ने तो यहां तक लिखा है कि "राष्ट्रीय भावना की प्रेरणा के अन्तर्गत नक़्शा बदल गया—केवल धार्मिक ही नहीं, वरन् पूरब की हर बात को आध्यात्मिक और ऊंचा उठाने वाला बताकर गौरवान्वित किया गया, जबकि पश्चिम की हर चीज़ का अत्यधिक गिराने वाली और भौतिक कहकर निन्दा की गयी।"

बंगाल में बंकिमचन्द्र जैसे साहित्यकार ने उग्र साम्प्रदायिकता के सहारे राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल किया। उनकी 'आनन्द मठ' नामक पुस्तक के बारे में कहते हैं कि वह आधुनिक 'बंगीय राष्ट्रीयता' की गीता बन गयी, जो मुस्लिम-शत्रुता पर आधारित थी। उनके 'वन्दे मातरम्' गीत ने भी राष्ट्रवाद को मुतास्सिर किया। तिलकजी ने गीता की जो टीका-व्याख्या की, उससे भी राष्ट्रवादी भावनाएं उभरीं। कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि लोग उनकी 'गीता-रहस्य' को पढ़कर या सुनकर देश के लिए अपने को क़ुरबान करने पर आमादा हो गये। भारत को मां का दर्जा मिला और उसकी पूजा बड़े ज़ोर-शोर से होने लगी। देश के स्वाधीनता आन्दोलन में मुसलमानों का भी अहम रोल रहा।

हिन्दुत्व ने हिन्दुओं की इस बढ़ी हुई भावना का इस्तेमाल ग़ैर हिन्दुओं के ख़िलाफ़ हिन्दू राष्ट्र की शक्ल में करना चाहा और आज भी चाह रहा है—इसके लिए हिन्दुओं में किसी न किसी बहाने से एक 'जज़्बा' पैदा करने की

कोशिश की जा रही है । उस वक़्त आर०एस०एस० के संस्थापक डॉ० केशवराव हेडगेवार ने ऐलान कर दिया था : 'हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है', जबकि सावरकर ने कहा था कि "हिन्दू एक राष्ट्र हैं ।" लेकिन हिन्दुत्व के राष्ट्रवादी को करना क्या चाहिए ? डॉ० हेडगेवार का कहना है :

"हमें यह सिद्ध कर दिखाना है कि जनता के संगठन से देश की विराट शक्ति का निर्माण हो सकता है । इस कार्य के लिए हम में से प्रत्येक के हृदय में तीव्र व्याकुलता उत्पन्न होनी चाहिए । अन्य किसी भी बात में हमारी रुचि न हो । जिसने देश और समाज की सेवा करने का महान व्रत ग्रहण किया है, ऐसे स्वयं सेवक को अब सुख और आराम कहां ? कार्य ही उसका सब कुछ है । सारी शक्ति दांव पर लगाकर उसे क़ार्य में जुट जाना चाहिए । हम में अपने उद्देश्य को अपनी आंखों से पूरा होते देखने की प्रबल लालसा होनी चाहिए । मुझे पूरा विश्वास है कि संघ का प्रत्येक स्वयंसेवक अपना कर्तव्य पूरा करेगा ।...भारत की भाग्य-लक्ष्मी को आपके सिवा भला और कौन प्रसन्न कर सकता है ? और कौन है जो सर्वस्व का त्याग करते हुए सतत् पुरुषार्थ कर सके ? यह तो आपको और केवल आपको ही करना है ।" ('संघ-वृक्ष के बीज डॉ० केशव राव हेडगेवार', सुरुचि प्रकाशन, 1988, पृ० 64)

हिन्दुत्व के नज़दीक राष्ट्र से अभिप्राय हिन्दू राष्ट्र है । इसकी प्राप्ति के लिए उसका 'राष्ट्रवादी इन्सान' काम करता है । राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के दूसरे सरसंघ चालक एम०एस० गोलवलकर जी ने 1939 में ही लिख दिया था कि "हिन्दुओं की ज़मीन पर हिन्दू राष्ट्र ही होना चाहिए । और सिर्फ़ वे ही आन्दोलन वास्तव में राष्ट्रीय हैं, जिनका उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र को वर्तमान जड़ता से उबारकर पुन: सशक्त करना है । बाक़ी सब राष्ट्रहित के लिए घातक हैं ।"

("We Or Our Nationhood Defined")

गोलवलकर जी इसी किताब में हिन्दू राष्ट्र की प्राप्ति के लिए फॉसीवादी तरीक़ा इख़्तियार करने की वकालत करते हुए कहते हैं : "नस्ल और संस्कृति की पवित्रता को क़ायम रखने के लिए अपने देश को यहूदियों से ख़ाली करके जर्मनी ने दुनिया को हैरत में डाल दिया । नस्ल के गौरव की यह उच्चतम अभिव्यक्ति है । जर्मनी ने यह भी दिखला दिया है कि उन नस्लों और संस्कृतियों को, जिनके मतभेद मूल तक जाते हैं, एक संपूर्ण इकाई में जज़्ब करना लगभग असंभव है । यह हम भारतीयों के लिए एक अच्छा उदाहरण है, जिससे सबक़ लेना चाहिए ।"

लेकिन सवाल उठता है कि हिन्दू राष्ट्र कैसा होगा, उसका स्वरूप क्या होगा, उसमें कौन-कौन से लोग रहेंगे और उसके निवासियों के साथ अदलो-इन्साफ़ की बुनियादें क्या होंगी ? आदि कई ऐसे सवाल उभरते हैं, लेकिन इनका जवाब आज तक हिन्दुत्व के किसी नुमाइन्दे या और किसी ने आधिकारिक तौर पर भी नहीं दिया है । हां, यह बात और है कि चंद एक बातें कभी कहीं किसी ने कह दी हो । इस पर लेख के अंतिम भाग में चर्चा की जाएगी । क्या ऐसी बात है कि हिन्दू राष्ट्र हिन्दू-धर्म की पुस्तकों की बुनियाद पर खड़ा नहीं हो सकता या वह ऐसा है कि समाज में उसे लागू नहीं किया जा सकता ? इसके अलावा हिन्दुत्व जो दरअस्ल गांधी जी के 'रामराज्य' के तोड़ के तौर पर अस्ल 'रामराज्य' की बात सियासी अंदाज़ में करता है, वह कैसा है ? क्या वह 'रामराज्य' हिन्दू राष्ट्र का आदर्श बन सकता है ? इन सब बातों को जानने के लिए हिन्दू धर्मशास्त्रों में वर्णित राजकार्य से मुताल्लिक़ उन बातों को देखना होगा, जिनसे राष्ट्र का स्वरूप तय पाता हो । यहां हम इस सिलसिले में कुछ चीज़ों पर प्रकाश डालेंगे–

राजा का पद

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि हिन्दू-धर्म में लगभग हर चीज़ पर तीव्र मतभेद विद्यमान है । कुछ विद्वान इसे हिन्दू धर्म की ख़ूसूसियत क़रार देते हैं, लेकिन यह सच है कि मतभेदों की वजह से किसी एक चीज़ पर ठीक से अमल एक लिहाज़ से असंभव हो जाता है । अगर कभी हुआ भी हो, तो उसकी आत्मा में प्राय: स्थायित्व नहीं रहता । हिन्दू-धर्म की राजनैतिक चीज़ें भी इसी दायरे में आ जाती हैं। महाभारत में राजनैतिक बातें अन्य धर्मग्रंथों से बहुत ज़्यादा हैं ।

सभी जानते हैं कि किसी राष्ट्र के स्वरूप में राष्ट्र के मुखिया या राजा का पद सबसे महत्वपूर्ण होता है । लेकिन हिन्दुओं के नज़दीक सतयुग के गण समाज में राष्ट्र या राज्य का कोई तत्व नहीं था । महाभारत के शांति पर्व (59-14) में है :

''सतयुग में न कोई राज्य था, न राजा था, न दंड था और न दंड देने वाला था। सभी प्रजा-जन धर्म ही से परस्पर अपनी रक्षा करते थे।''

इसी पर्व में एक दूसरे स्थान पर आया है : ''सुना जाता है कि प्रजा धिग्दंड (लोक निन्दा) ही से शासित होती थी।'' (294-8) लेकिन यह व्यवस्था चल नहीं सकी। शांति पर्व (254-11/13) में इसका कारण यह बताया गया है : ''गण समाज के लोगों में घमंड पैदा हुआ, जो प्रजा के धर्म नष्ट होने की ख़ास वजह है। घमंड दूसरे को अपने से नीचा समझने और अपने को श्रेष्ठ समझने की भावना ही है। जिनमें घमंड आया उनमें क्रोध भी पैदा हुआ और क्रोध के वश में उनका आचरण लज्जापूर्ण हो गया। वे निर्लज्ज व्यवहार करने लगे। उनमें मोह भी पैदा हुआ। मोह के वश में वे पहले की तरह देख नहीं सकते थे। वे एक दूसरे को कुचल कर अपने को सुखी और समृद्ध बनाने का प्रयत्न करने लगे।'' गण व्यवस्था के टूटने के और भी कारण बताये गये हैं।

दूसरी तरफ़ ऋग्वेद (10-64-12) में आया है : ''आप लोगों में जो बड़े गण का सेनानी था वह व्रात (गणों के समूह, गणपद या जनपद) का पहला राजा था।'' इस मंत्र से यह मालूम हुआ कि जो शक्तिशाली होता था, वही राजा होता था। बाद में राजा का पद समाज की एक अनिवार्य ज़रूरत बन गया होगा। शांति पर्व (57-41) में ही है : ''सबसे पहले राजा की प्राप्ति करनी चाहिए, फिर पत्नी और इसके बाद दौलत इकट्ठी करनी चाहिए, क्योंकि राजा के अभाव में न तो पत्नी रह सकेगी और न धन प्राप्त हो सकेगा।''

राजा का पद ब्रह्मा ने बनाया है। शांति पर्व (220-87) के अनुसार ''जैसे लोगों को हिंसक जंतुओं का भय होता है, वैसे ही सरकश लोगों से भी हमेशा भय रहता है। उन्हें रोकने के लिए ब्रह्मा ने राजा की सृष्टि की। राजा में देवताओं के अंश होते हैं। मनुस्मृति (6-96 और 7-415) में आया है : ''विधाता ने इन्द्र, मरुत, यम, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्र और कुबेर के प्रमुख अंशों से युक्त राजा की रचना की, अतः वह (राजा) राजमहिमा के कारण सभी जीवों से आगे बढ़ जाता है।'' अग्नि पुराण (226-17/20) में बताया गया है कि राजा सूर्य, चन्द्र, वायु, यम, वरुण, अग्नि, कुबेर, पृथ्वी और विष्णु के कार्य करता है, अतः इसमें इनके अंश होते हैं। ''बालक राजा का भी यह सोचकर कि वह भी इन्सान ही है, अपमान नहीं करना चाहिए क्योंकि वह नररूप में देवता ही है।'' (मनुस्मृति 7-8 और शांति पर्व 68-40) यही बात दूसरे ढंग से गौतम धर्म सूत्र (11-32) और आपस्तम्ब धर्म सूत्र (1-11-31-5) में भी आयी है।

राजा कौन ?

यहां यह भी सवाल ख़ुद उठता है कि आख़िर राजा कौन हो ? किसे राजा बनने का हक़ है। अध्ययन से मालूम होता है कि क्षत्रिय ही को राजा बनने का हक़ है। ऋग्वेद (10-90) में 'राजन्य' (क्षत्रिय) लफ़्ज़ आया है, उसका अर्थ ही है : राजा संबंधी या राजकाज से संबंधित। डॉ॰ राजबली पाण्डेय के अनुसार, ''राजन्य क्षत्रिय का पूर्ववर्ती शब्द है, किन्तु दोनों की व्युत्पत्ति एक है (राजा संबंधी या राजकुल का)। वैदिक साहित्य में क्षत्रिय का प्रारंभिक प्रयोग राज्याधिकारी या दैवी अधिकारी के अर्थ में हुआ है।'' (हिन्दू धर्मकोश, पृ॰ 215)। मनुस्मृति (7-1) में स्पष्ट रूप से आया है कि क्षत्रिय ही राजा बनने के योग्य है। शांति पर्व (69-104) का भी ऐसा ही मानना है : ''दण्डनीति क्षत्रिय (राजा) का ख़ास व्यापार है।''

महाभारत के अनुसार वसिष्ठ ने कहा :

''बली राजा क्षत्रियश्य पृथिव्यां पतिरेव च।''

यानी, ''राजा बलवान है और क्षत्रिय है और पृथ्वी का पति भी है।'' श्रीमद भगवद्गीता (8-43), श्रीमद भागवत पुराण (12-1) और ब्रह्मवैवर्तपुराण (कृष्ण जन्म खंड, 83 वों अध्याय) आदि में भी क्षत्रिय के राज कर्म की ओर संकेत किया गया है। कुछ और भी उद्धरण दूसरे ग्रंथों व पुस्तकों में मिलते हैं।

आपस्तम्ब धर्म सूत्र (2-5-10-16) में क्षत्रिय (राजा) से कहा गया है कि वह धर्म और अर्थ में पारंगत ब्राह्मण को पुरोहित के पद पर नियुक्त करे। वाल्मीकि रामायण (2-67) में आया है कि ''दशरथ के दिवंगत हो जाने पर मार्कण्डेय और वामदेव जैसे मुनियों ने अमात्यों के साथ कुलपुरोहित वसिष्ठ के सामने यह ऐलान किया कि राम

और लक्ष्मण जंगल को चले गये, भरत और शत्रुघ्न केकय देश में हैं, अत: इक्ष्वाकुकुल के किसी वंशज को राजा चुनना चाहिए।'' आदि पर्व (150-21/25) में है : ''राजा के रूप में क्षत्रिय अपने संग्रहात्मक और दानात्मक कर्मों द्वारा भी लोक की सेवा करता था।'' मतलब यह कि राजा क्षत्रिय ही होगा।

ऐसे एकाध उदाहरण मिलते हैं, जहां ब्राह्मण या शूद्र राजा बना हो। हमारे देश में शूद्र के राजा बनने की घटना 1674 ई॰ में उस वक़्त पेश आयी, जब शिवाजी का राजा के रूप में राज्याभिषेक हुआ। शिवाजी भोसले वंश के थे, जिसका शुमार शूद्रों में होता था। शिवाजी को राजा बनाने में समर्थ गुरु राम दास का विशेष योगदान था। राम दास जी को हिन्दुत्व के पुनर्जागरण में शंकराचार्य के बाद दूसरा स्थान दिया जाता है। इन्होंने ही हिन्दुत्व के प्रतीक के तौर पर भगवा ध्वज प्रचलित किया था। वक़्त की नज़ाकत को भांप कर जिस तरह शंकराचार्य ने वर्ण व्यवस्था को दोबारा क़ायम करके शूद्रों को धार्मिक कर्मकांड करने के मामले में थोड़ी-सी ढील दी थी, उसी तरह राम दास जी शूद्रों को और रियायतें देना चाहते थे। उनका ख़्याल था कि शूद्रों को साथ लेकर ही हिन्दू धर्म और संस्कृति का बोलबाला हो सकता है। लिखने वाले तो यहां तक लिखते हैं :

''छत्रपति शिवाजी द्वारा स्वराज्य स्थापना से उन्होंने (रामदासजी) हिन्दू राष्ट्र का स्वतंत्र सभा केन्द्र निर्माण किया। इस घटना को यदि हम युग-प्रवर्तक घटना मानें तो समर्थ राम दास द्वारा इस देश के मूल राष्ट्रीय समाज को जीवन दृष्टि देकर स्वराज्य निर्माण की प्रबल आकांक्षा, पुरुषार्थ, पराक्रम और प्रयत्न की ज्योति प्रज्ज्वलित करने का श्रेय उन्हें है।''

(बी॰के॰ केलकर, ''श्रेय'', रामदास नंबर, पृ॰ 68)

लेकिन क्या वास्तव में रामदास जी शूद्र को राजा के पद तक ले जा सके ? इसका जवाब ''नहीं'' में है। शिवाजी को उस वक़्त तक राजा नहीं घोषित किया गया, जब तक कि ब्राह्मणों ने उनके क्षत्रिय होने का ऐलान नहीं कर दिया। इस वाक़िया को डॉ॰ जगदीश चन्द्र जैन अपने इन शब्द में लिखते हैं :

''उन दिनों भोंसले वंश को शूद्र माना जाता था। इस कलंक से मुक्त होने के लिए राज कर्मचारियों ने काशीवासी विश्वेश्वर भट्ट (गागल भट्ट) को दान-दक्षिणा देकर उनसे लिखवा लिया गया कि शिवाजी के आदि पुरुष सूर्यवंशीय क्षत्रिय चित्तौड़ के महाराजा के बेटे हैं। विश्वेश्वर भट्ट ने शिवाजी के अभिषेक का प्रधान पुरोहित होना स्वीकार कर लिया और दक्षिण में बड़ी-बड़ी रक़में पाने के लोभ से महाराष्ट्र के दूसरे ब्राह्मणों ने भी बिना सिकी विरोध के शिवाजी को क्षत्रिय मान लिया। शिवाजी के अभिषेक उत्सव पर लगभग 50 हज़ार ब्राह्मण उपस्थित हुए थे, जो चार महीने तक शिवाजी के ख़र्च पर मिठाई और पकवान उड़ाते रहे। जिस समय शिवाजी ने तीर्थ यात्रा के बाद प्रायश्चित किया और उन्हें यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनाया गया, तो उस समय उन्होंने मुख्य अध्वर्यु (पुरोहित) विश्वेश्वर भट्ट को 35 हज़ार रुपये और अन्य ब्राह्मणों को 85 हज़ार रुपये दान दिये ! तुलादान के समय लगभग दो मन सोना, चांदी और अन्य चीज़ें और पांच लाख रुपये नक़द ब्राह्मणों को दिये। इसके अलावा देशों को लूटते समय शिवाजी और उनके सैनिकों ने जो गाय, ब्राह्मणों, औरत और लड़कों को क़त्ल किया था, उसके कफ़्फ़ारा के बतौर 8 हज़ार रुपये दान दिये ! सब मिलाकर शिवाजी के अभिषेक की धूमधाम में 50 लाख रुपये (कृष्णजी के अनंत सभासद के अनुसार सात करोड़ दस लाख रुपये) ख़र्च हुए थे, जिससे राजकोष (सरकारी ख़ज़ाना) ही ख़ाली हो गया था।''

(सम्प्रदायवाद, पृ॰ 72-73)

इस प्रकार स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म को शूद्र का राजा बनना पसन्दीदा नहीं है। मनुस्मृति (4-61) में आया है : ''शूद्र द्वारा शासित देश में ब्राह्मणों को नहीं रहना चाहिए।'' महाभारत में भी है कि धृतराष्ट्र जन्मान्ध थे और विदुर दासी के पुत्र थे। इसलिए राज्यों के अधिकारी नहीं माने गये। पाण्डु को ही राज्य मिला। (आदि पर्व, पृ॰ 57, संक्षिप्त महाभारत, गीता प्रेस) कुछ पुराणों में भविष्यवाणी के तौर पर कहा गया है कि कलियुग में ज़्यादातर शूद्र राजा होंगे। (द्रष्टव्य-हरिवंश (3-3-6), मत्स्य (144-40/43) और लिंग (40-7 और 42) आदि। हिन्दुत्व इसे पसन्द नहीं करता कि राजा का पद शूद्र को मिले, लेकिन उसे यह पसन्दीदा है कि उन्हें हैसियत के अनुसार दर्जा देकर अपना

अभीष्ट मक़सद हासिल किया जाए । 1992 में पूर्व प्रधानमंत्री वी॰पी॰ सिंह के इस बयान पर सख़्त एतिराज किया गया कि 'दलित को प्रधानमंत्री बनाया जाना चाहिए ।''

हिन्दू धर्म में एक सामान्य-सा नियम था कि राजा सिर्फ़ मर्द बने । पौराणिक काल और महाभारत के ज़माने के राजा वंशगत होते थे । विष्णु पुराण और महाभारत इन वंशों का विस्तृत उल्लेख आता है । K. P. Jayaswal ने "Hindu Polity" और R. C. Majumdar ने "Corporate life in Ancient India" में लिखा है कि इतिहासकाल के पहले विशेष रूप से संहिता (वेदों) और ब्राह्मण (ग्रंथों) के ज़माने में राजाओं का चुनाव होता था । ऐसा नहीं लगता कि उस ज़माने में चुनाव होता होगा । अगर ऐसा होता तो राजनीतिक ज्ञान के लिए यूनान की तरफ़ रुजू न करना पड़ता ।

राजा के अधिकार

ब्राह्मणों के सिलसिले में राजा के अधिकार सीमित थे । गौतम धर्म सूत्र (11-1-7 और 8) में आया है : ''ब्राह्मणों के सिवा राजा सब पर शासन करता है । ब्राह्मणों के अलावा सभी अन्य लोगों को नीचे आसन पर बैठकर राजा का सम्मान करना चाहिए । ऐतरेय ब्राह्मण (37-5 और 40-1) और गौतम धर्म सूत्र (8-1, 11-27) में कहा गया है : ''ब्राह्मण काल ही से ब्राह्मणों और राजा की एकरूपता की और राजा द्वारा ब्राह्मण की सम्मति का आदर करने की परम्परा चली आती रही है ।'' शुक्र नीतिसार (4-7-332 और 333) में तो यहां तक कहा गया है : ''अगर ब्राह्मण लोग अत्याचारी राजा को हटाकर मार डालें तो इस कर्म से पाप नहीं लगता । यही बात महाभारत के अनुशासन पर्व (61-32 और 33) और शांति पर्व (92-19) में कही गयी है । तैत्तिरीय संहिता (2-3-1) और शतपथ ब्राह्मण (12-9-3-1) ने भी लिखा है कि दुष्ट राजा बाहर किये जाते रहे हैं । ऐसी भी घटनाएं मिलती हैं कि ब्राह्मणों ने राजाओं को मार डाला । भागवत पुराण (4-14) और शांति पर्व (59-93-95) में कहा गया है कि राज़ा वेन को ब्राह्मणों ने मार डाला क्योंकि वह देवद्रोही था, अपने लिए यज्ञ कराना चाहता था और अधर्म पालक था ।

वेन ने यह आदेश दिया था कि न यज्ञ किया जाए और न हवन किया जाए । उनका कहना था कि द्विजातियों द्वारा किये जाने वाले सभी यज्ञों में मैं ही प्रशंसनीय और पूज्यनीय हूं । श्रीमद भागवत् (4-14-16) के अनुसार ''वेन ने सब तरफ़ डंका पिटवाकर यह घोषणा करवायी कि कोई भी ब्राह्मण न यज्ञ करे, न दान दे और न हवन करे ।'' ब्राह्मणों ने इसकी सख़्त मुख़ालफ़त की और वेन को ऐसा करने से रोका । वेन ने कहा : ''राजा सर्व देवमय होता है । इसलिए हे ब्राह्मणों, घमंड छोड़कर कर्मों से मेरी पूजा करो । मेरे लिए बलि (क़ुरबानी) लाओ । मुझ से पहले खाने वाला दूसरा कौन हो सकता है । इस पर ब्राह्मणों ने कहा : ''मार डालो, मार डालो, इस पापी दारुण प्रकृति वाले को ।'' (4-14-31)

महाभारत के आदि पर्व (75-20) के अनुसार राज पुरुरवा को ब्राह्मणों ने मार डाला, क्योंकि उसने उनके रत्न छीन लिए थे । परशुराम ने जो कि ब्राह्मण थे, 21 बार क्षत्रियों का सारी ज़मीन से सफ़ाया किया था और स्यमन्तपंचक में ख़ून से तीन कुंड भर दिये थे (भागवत पुराण 1-3-20, 2-7-22, 6-15-13, और 10-40-20)। परशुराम को कभी छठा तो कभी 16वां अवतार बताया जाता है, मगर राम, जो कि सातवें अवतार थे, के साथ इन्हें रामायणों में दिखाया गया है । इसका मतलब यह हुआ कि एक साथ दो अवतार हो सकते हैं ।

हर गोविन्द लिखते हैं : ''क्षत्रियों के ख़िलाफ़ ब्राह्मणों के इस युद्ध का नेतृत्व करने वाले परशुराम का प्राचीन ग्रंथकारों ने भगवान का अवतार का स्थान दे दिया था, लेकिन बाद में क्षत्रियों की प्रतिष्ठा स्थापित करने वाली रामायण के रचयिता ने ब्राह्मण परशुराम को क्षत्रिय राम से परास्त करवा दिया और बाद में उस राम को भगवान बना दिया ।'' ('भारतीय समाज का विकास', पृ॰ 55)

उपर्युक्त विवरणों से यह मालूम हुआ कि राजा तो क्षत्रिय होगा, जिस पर कन्ट्रोल ब्राह्मणों का रहेगा । लेकिन यह बात भी हिन्दू धर्म ग्रंथों में आयी है कि क्षत्रिय और ब्राह्मण की एकता ही से सर्वांगीण उन्नति हो सकती है ।

वैदिक शासन-व्यवस्था

हिन्दू राष्ट्र की शासन-व्यवस्था को समझने के लिए ज़रूरी है कि देखा जाए कि इस सिलसिले में हिन्दू धर्म की पुस्तकें क्या कहती हैं सबसे पहले हम वैदिक शासन-व्यवस्था

को लेते हैं । यह पहले ही लिखा जा चुका है कि उस अऐतिहासिककाल में हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार राष्ट्रीयता का कोई तत्व नहीं पाया जाता । लेकिन ब्राह्मण ग्रंथों विशेष रूप से ऐतरेय ब्राह्मण के 8वें अध्याय में कुछ शासन व्यवस्थाओं का उल्लेख ज़रूर मिलता है ।

पंडित दामोदर सातवलेकर के 'वैदिक राज्य शासन' शीर्षक से लिखे लेख के अनुसार ऐतरेय ब्राह्मण में आठ क़िस्म के राज्यों का उल्लेख है : साम्राज्य, भौज्य, स्वाराज्य, वैराज्य, पारमेष्ठय, महाराज्य, आधिपत्यमय और समन्तपर्यायी।

('कल्याण', हिन्दू संस्कृति विशेषांक, पृ॰ 383)

इन राज्यों से तात्पर्य किस प्रकार के राज्यों से है ? इन्हें यहां सिलसिलेवार पेश किया जा रहा है :

1. साम्राज्य : उत्तर राम चरित (6-23) और रघुवंश (4-5) में 'साम्राज्य' शब्द सार्वभौम राज्य और विश्व प्रभुता के अर्थ में आया है । पंडित सातवलेकर के अनुसार "ऋषियों के साम्राज्य में एक समर्थ राजा का दूसरे अनेक राजाओं को परास्त करना, उनको अपना माण्डलिक (अधीनस्थ) बनाना और उनको 'आर्य विधान' देकर इस विधान के अनुसार राज्य चलाने का आदेश देना-इतना ही होता था । ('कल्याण', हिन्दू संस्कृति विशेषांक, पृ॰ 384)

2. भौज्य : "यह दूसरा राज्य-शासन है । इसके दो अर्थ मुख्यत: होते हैं । 'भू-ज'-पृथ्वी की नैसर्गिक (Natural) मर्यादाओं से परिवेष्टित राज्य । जिस तरह भारतवर्ष-यह उत्तर में हिमालय और दक्षिण में समुद्र से वेष्टित है । अत: यह भौज्य है । चूंकि निसर्ग (Nature) की इस देश के लिए मर्यादा है, अत: यहां का राजा इतने ही भू-भाग पर राज्य करे और बाहर के देशों पर हमला न करे ।...इस तरह कई ऋषियों ने भौज्य के नियम निर्धारित किये थे । भौज्य का दूसरा अर्थ जो दूसरे ऋषियों के दल द्वारा निर्धारित हुआ था, वह था 'भुज'="पालनाभ्यवहारयो:" (To protect and govern)-प्रजा का भोजन-प्रबंधन करना और उनको सुरक्षित रखकर उन पर राज्य करना ।" (उक्त)

3. स्वाराज्य : स्वा-राज्य में 'स्व' (नफ़्स) की शुद्धता, पवित्रता और निर्दोषता रखने या करने की कोशिश होती है और ऐसे संयमी पुरुष ही राज्याधिकार पर रखे जाते हैं, इसलिए सम्पूर्ण राज्य-शासन पाक रहता है । रिश्वतख़ोरी, दंभ, असत्य, लोभ, अधिकार लिप्सा आदि उक्त स्वाराज्य में नहीं रहते । परन्तु जो 'स्वराज्य' है, उसमें 'स्व' (नफ़्स) की शुद्धि की उपेक्षा और 'राज्य' तंत्र की शक्ति से स्वकीयों के सुख का संवर्धन करने का प्रयत्न होता है । इसलिए गुटबन्दी उत्पन्न होती है । एक गुट दूसरे गुट को दबाने की कोशिश करता है और सर्वत्र संघर्ष का वायुमंडल (माहौल) बढ़ता जाता है । आजकल हम सर्वत्र यही देख रहे हैं ।" (उक्त, पृ॰ 386) ऋग्वेद (5-66-6) में 'स्वाराज्य' नहीं 'स्वराज्य' शब्द मिलता है ।

4. वैराज्य : "इसमें कोई राजा नहीं होता, सब जनता ही मिलकर अपना शासन चलाती है । इस वैदिक राज्य पद्धति के अवशेष अब भी भारतवर्ष में हैं । महाराष्ट्र में इसका नाम 'दैव' होता है । वह जाति संपूर्णतया अपनी ही जाति पर अपना अधिकार चलाती है । कोई एक राजा, शासक, नियामक, अध्यक्ष या प्रधान नहीं होता । संपूर्ण जाति एक स्थान पर जमा होती है और निर्णय करती है, उस निर्णय का पालन वे लोग करते हैं । भारतवर्ष में ऐसी वन्य जातियां भी हैं, कि जो इस 'वैराज्य' के अवशेष को आज भी बताती हैं । इसमें दोष यह है कि इस प्रकार का शासन बहुत बड़े भू-भाग पर नहीं हो सकता । छोटे-छोटे स्थानों पर थोड़ी संख्या में चलने वाला यह शासन है । अथर्ववेद में कहा गया है : "विराड वा इदमग्र आसीत्" (8-10-1)

यानी, 'शुरू में राजा या शासक नहीं था ।' इसी का नाम वैराज्य है ।" (उक्त, पृ॰ 385)

5. पारमेष्ठय : "परमेष्ठी नाम प्रजापति (ईश्वर) का है । परमेश्वर का यह नाम है । सब पर परमेश्वर का राज्य-शासन है, यह जानकर इसके अनुकूल अपना राज्य-शासन चलाना है ।" (उक्त)

6. महाराज्य : "अनेक छोटे-छोटे राज्य खुद की इच्छा से एक होते हैं और एक विधान के अन्दर अपने-अपने आपको रखते हैं, वह महाराज्य कहलाता है । इसमें किसी पर ज़बरदस्ती या आघात नहीं, परन्तु इसमें सबका लाभ ही है । जगत् की स्पर्धा में छोटे-छोटे राज्य नहीं रह सकते, इसलिए उनका परिवर्तन महाराज्य में होना उचित ही है, इसी तरह परिवर्तन होते-होते समुद्र तक पृथ्वी का एक विशाल महाराज्य हो सकता है और अगर इसमें स्वार्थ न बढ़ा, तो

सबको अत्यंत सुख मिल सकता है ।

7. **आधिपत्यमय :** पति और अधिपति–ये राज्य के अधिकारियों के नाम हैं । इनकी सम्मति से जो राज्य चलता है, वह आधिपत्यमय राज्य-शासन है । अंग्रेज़ी में इसका नाम 'ब्यूरोक्रेसी' है । स्वार्थ बढ़ जाने के कारण इसका भी आज बहुत ही घृणित अर्थ हो गया है ।

8. **समन्तपर्यायी :** जो राज्य-शासन सामंतों के अधीन रहता है, उसका यह नाम है । सामंत मांडलिक राजाओं का नाम है । उनके अधीन यह राज्य-शासन रहता है ।''(उक्त)

स्पष्ट है कि ये सभी शासन-व्यवस्थाएं अधूरी तो हैं साथ ही अस्पष्ट भी–इनकी व्यावहारिता की बात तो दूर की है । लेकिन साम्राज्य, महाराज्य आदि शासन-प्रकार से हिन्दुत्व का लक्ष्य ज़रूर समझा जा सकता है ।

महाभारत की शासन-व्यवस्था

ब्राह्मण ग्रंथों में उपर्युक्त इन आठ प्रकार के राज्यों का महाभारत में भी नामोल्लेख मिलता है, लेकिन इसका ब्राह्मण ग्रंथों की तरह यहां भी विशेष ब्योरा नहीं मिलता । कहीं-कहीं कुछ गणराज्यों की थोड़ी-सी बात नारदर-कृष्ण संवाद (शांति पर्व-2), भीष्म-धुधिष्ठिर संवाद (शांति पर्व-108), सुभद्रा हरण (आदि 212/9-28 और द्रोण 119/24-26) आदि में मिलती है । लेकिन विवरण नहीं मिलते, महाभारत में ख़ास क़िस्म की राजतंत्रीय शासन-व्यवस्था पर ही ज़ोर दिया गया है ।

महाभारत के ज़माने में, (यह ज़माना अऐतिहासिक काल में आता है) राज्य को पैतृक और ख़ानदानी चीज़ समझा जाता था (उद्योग 1-15, आरण्यक 31-1 और 77-9)। अगर यह मान्यता न होती, तो पुष्कर, नल, युधिष्ठिर आदि प्रजा की अनुमति के बिना राज्य को जुआ के दांव पर न लगा पाते । लोग नल को जुए के खेल से अलग करने की कोशिश में कामयाब नहीं हो सके (आरण्यक 56-11; 57 6-7)। दुर्योधन को भी इससे रोका नहीं जा सका । पाण्डवों के वन जाते समय की बात हो या इससे पहले लाक्षागृह दाह की–कौरवों की ज्यादतियों पर प्रजा फूट-फूटकर रोयी तो, लेकिन बग़ावत न कर सकी ।

इससे यह मालूम हुआ कि राजतंत्र का राजा सर्वेसर्वा होता था । उसके बारे में ख़याल था कि उसमें देवत्व है । राजा मानव, क्षत्रिय और शासक इन तीन व्यक्तियों के साथ सत्तारूढ़ होता था (शांति 76/3-4)। शांति पर्व (21-19, 77-28/30) में आया है कि राजा को गाय और ब्राह्मण की रक्षा करने में मर जाना श्रेयस्कर है । भीष्म पर्व (17-11) में भीष्म ने कहा है कि क्षत्रिय के लिए घर में किसी रोग से मर जाना पाप है, परम्परा से चला आया हुआ नियम तो यह है कि वह लोहे ही से मृत्यु का वरण करे । यही बात दूसरे ढंग से शल्य पर्व (5-32) और शांति पर्व (97-23 और 25) में भी आयी है ।

पहला राजा कौन ?

महाभारत के अनुसार स्वायम्भुव मनु पहले राजा थे, जबकि पौराणिक कथा के अनुसार पहले राजा का नाम दक्ष था । ''घर, खेत और उपज को लेकर लोगों में परस्पर वाद-विवाद की आशंका से ब्रह्मा ने सामान्य नियम बना दिया । वाद-विवाद निबटाने में समर्थ लोगों को क्षत्रिय, सत्यवादी वेद के विद्वानों को ब्राह्मण, इन दोनों से कमतर गुण वाले कृषकां को वैश्य और कृषि वग़ैरह के लिए आवश्यक उपकरण के निर्माता हस्तशिल्पियों और परिचालकों को शूद्र पद पर प्रतिष्ठित किया ।'' (राजेन्द्र सिंह, 'जन ज्ञान', 15 फ़रवरी-15 मार्च 1992)।

शांति पर्व (67-18/19) में आया है कि ''उस वक़्त के समाज ने यह नियम बनाया कि हमारे बीच जो व्यक्ति निष्ठुर बोलने वाला, डण्डे का भय दिखाने वाला, परस्त्रीगामी और दूसरे का माल छीनने वाला हो, उसका सामाजिक त्याग हो । इस नियम का पालन करते हुए सभी वर्ग सुखपूर्वक रहने लगे ।'' किन्तु यह सामान्य नियम अधिक समय तक बरक़रार न रह सका । तब लोक में पुनः अनादर-प्रवृत्ति शुरू हुई । इससे जनता फिर दुख में रहने लगी । दुख से पीड़ित होकर सब लोग मिलकर ब्रह्मा के पास जाकर बोले कि 'भगवन ! हम ईश्वर (शासक) के बिना विनाश को प्राप्त हो रहे हैं, हमें ऐसा ईश्वर प्रदान करें जिसका हम आदर कर सकें और हमारा प्रतिपालन करने में समर्थ हो ।'

(शांति 67-20/21)

जन-पीड़ा को देखकर ब्रह्मा ने अपने शिष्य (मानस पुत्र) स्वायम्भुव मनु को ईश्वर (शासक) होने का आदेश दिया, लेकिन मनु ने राजा बनने से इन्कार करते हुए कहा :

"मैं पाप के इस काम से डरता हूं । राज्य करना बड़ा ही दुष्कर काम है । विशेषकर मनुष्यों का राजा बनना जो हमेशा ही मिथ्या-वृत्ति वाले होते हैं ।" (शांति 67-22)

तब पीड़ित लोगों ने स्वायम्भुव मनु से कहा : "आप भयभीत न हों । पाप तो पाप करने वालों को लगेगा । हम आपको 50 पशु और 50 भार सोना (यानी पशुओं और सोना का दो प्रतिशत) और जायदाद का 10 प्रतिशत देंगे । इसके अलावा विवाहों पर कन्या शुल्क देंगे ।" (शांति 67/23-25)

इस आश्वासन पर स्वायम्भुव मनु ने राजा बनना स्वीकार कर लिया । पौराणिक कथा के अनुसार पहला राजा दक्ष को बनाया गया था । गरूड़ पुराण में आया है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की कामना से धर्म, रुद्र, मनु और सनकादि को मानस-पुत्र, फिर दाहिने अंगूठे से दक्ष की पत्नी को पैदा किया । इस बीवी से दक्ष के दस लड़कियां हुईं, जिन्हें दक्ष ने ब्रह्मा के मानस पुत्रों को दे दिया (रुद्र को दक्ष की सती नाम की लड़की मिली । (मत्स्य पुराण 60-6/7, 10-11, 145-90)। भृगु की राय पर ब्राह्मणों द्वारा दक्ष को प्रजापति (राजा) का पद दिया गया । पहले राजा को प्रजापाल ही कहा जाता था, लेकिन दक्ष को प्रजापति बनाया गया, जिसे रुद्र और उनके लोगों ने स्वीकार नहीं किया ।

प्रजापति बनाये जाने के बाद जब दक्ष देवताओं की संसद में आये, तो सभी देवताओं ने उनके सम्मान में खड़े होकर उनका स्वागत किया । लेकिन रुद्र ने उठने से इन्कार कर दिया । यह बात दक्ष को और उनके समर्थक भृगु आदि ब्राह्मणों को बुरी लगी और वहीं पर कुछ अप्रिय बातें भी हो गयीं । प्रजापति बनने की खुशी में दक्ष ने एक यज्ञ किया । रुद्र गण को अपमानित करने के लिए, जो उन्हें प्रजापति मानने के लिए तैयार नहीं थे, इस यज्ञ में आमंत्रित नहीं किया । रुद्र गण को यह बात बहुत बुरी लगी । पार्वती (सती) बिन बुलाये यज्ञ में शरीक होने के कारण अपमानित हुईं और यज्ञ-स्थली में अपने को जला डाला (मत्स्य पुराण 4-54)। पार्वती सती होने के कारण 'सती' कहलायीं । यह घटना सती-प्रथा का आधार भी बनी । रुद्र के आदेश पर उनके गणों (लोगों) ने वहां जाकर यज्ञ को नष्ट कर दिया और यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों को बुरी तरह मारा-पीटा । भृगु की दाढ़ी उखाड़ ली गयी, दक्ष पर रुद्र (शिव) का क्रोध देखकर हंसने वाले पूषा के दांत तोड़ दिये गये और एक अन्य यज्ञ कराने वाले की मूंछ उखाड़ी गयी । बाद में देवताओं ने यह समझौता कराया कि यज्ञों में रुद्र गण को भी आमंत्रित किया जाएगा । मत्स्य पुराण में आया है कि दक्ष ने जब देखा कि मानस सृष्टि से ज़रूरत के अनुसार वृद्धि नहीं होती, तब उन्होंने मैथुन द्वारा सृष्टि का विधान चलाया ।

सामाजिक ढांचे पर एक नज़र

जिस तरह मनुस्मृति के सामाजिक क़ानून और उसका ढांचा ऊंच-नीच की सख़्त बुनियादों पर आधारित होने के कारण अव्यावहारिक और निन्दनीय है, उसी तरह की महाभारत में भी कुछ चीज़ें आयी हैं । शांति पर्व में वर्णों को यह पहचान बतायी गयी है : "ब्राह्मणों का सफ़ेद वर्ण है, क्षत्रियों का लाल, वैश्यों का पीला और शूद्रों का काला ।" इस पर भारद्वाज ने अंदेशा ज़ाहिर किया : "अगर रंग ही से चारों वर्णों की पहचान की जाएगी, तो यह दिखायी देगा कि सभी वर्णों में वर्ण संकर हो गया है ।" तो भृगु को कहना पड़ा : "रंग की कोई विशेषता नहीं है । यह जगत तो ब्राह्मणमय ही है । ब्रह्मा के द्वारा यह पहले ही बनाया गया है । बाद में कर्मों के आधार पर वर्ण बने ।" (188-10) इसी पर्व (60-42) में है कि तीनों वर्णों की सृष्टि ब्राह्मणों ही से हुई ।

महाभारत में वर्ण का आधार कर्म माना गया है, लेकिन शूद्र का काम अच्छा नहीं माना गया है । शांति पर्व (294-3) में ही आया है : "ब्राह्मण क्षत्रिय का काम करे या वैश्य का काम करे या कोई भी काम न करे तो वह पतित नहीं माना जाता । लेकिन अगर वह शूद्र का काम करता है, तो पतित हो जाता है ।" शूद्र के जो लक्षण होते हैं वे ब्राह्मण में नहीं होते (वन पर्व, 180-25)। इसी पर्व (216-16) के अनुसार "पतनशील और विकर्म (बुरा कर्म) करने वाला ब्राह्मण भी दंभी और बुरे काम वाला होता है और प्राय: शूद्र के समान होता है ।" लेकिन चारों वर्णों में ब्राह्मण ही श्रेष्ठ है । ययाति ने कहा है :

एक देहोद्भवा वर्णाश्चत्वारोऽपि वराङ्गने ।
पृथग्धर्मो पृथक्छौवास्तेषां तु ब्राह्मणोवर: ।।

यानी, "सभी चारों वर्ण एक ही देह से पैदा होते हैं । उनके कर्म और शौच (पाकी) अलग-अलग होते हैं । उनमें ब्राह्मण श्रेष्ठ होता है ।" (शेष अगले अंक में)

हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) की जीवनी

हज़रत मुहम्मद(स०) जीवन और संदेश	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	9.00
प्यारे नबी कैसे थे?	इरफ़ान ख़लीली	16.00
प्यारे नबी ऐसे थे !	माइल ख़ैराबादी	10.00
जगत-गुरु	अबू ख़ालिद	50.00
जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मु० इनायतुल्लाह सुब्हानी	80.00
बड़ों की माँए	माइल ख़ैराबादी	10.00
रह्मतुल-लिल-आलमीन	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
विश्व-नायक	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	22.00
विश्व-नेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद : एक संक्षिप्त परिचय	डॉ० मुहम्मद अहमद	6.00
हज़रत मुहम्मद एक महान समाज सुधारक	प्रो० मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद	08.00
हज़रत मुहम्मद का आदर्श	श्री नाथूराम	15.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल० का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल०के संदेशों के मूल तत्त्व	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	4.00
आख़िरी नबी (सल्ल०)	हमूदा अब्दुल आती	05.00
अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	08.00
क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल०	नईम सिद्दीक़ी	65.00

परिवार इस्लाम की नज़र में

औरत और इस्लाम	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	24.00
औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इस्लाम और बर्थ कंट्रोल	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	45.00
नारी और इस्लाम	मक़बूल अहमद फ़लाही	6.00
परदा	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	80.00
परिवार इस्लाम की नज़र में	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
बहुविवाह	मौलाना सय्यद हामिद अली	50.00
माँ-बाप के अधिकार	मौलाना सय्यद लुत्फ़ुल्लाह क़ादरी	20.00
मुस्लिम पर्सनल ला और समान सिविल कोड	शम्स पीरज़ादा	12.00
मुस्लिम पर्सनल ला धार्मिक व सामुदायिक...	मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	6.00
मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा समस्या...	उमर अफ़ज़ल	35.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858

E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

बाल-अपराध की समस्या और उसका समाधान

मुहम्मद निज़ामुद्दीन
(दरभंगा, बिहार)

कोई भी व्यक्ति जन्म से अपराधी नहीं होता, परिस्थितियां उसे ऐसा करने के लिए मजबूर कर देती है । कभी-कभी बालकों को यह मालूम भी नहीं होता कि वह जो कर रहे हैं वह ग़ैर-क़ानूनी कार्य है । ऐसे कामों को अपराधों को श्रेणी में नहीं रखा जाता है । बाल अपराध की श्रेणी में वैसे कार्य आते हैं जो ग़ैर-क़ानूनी तो होते ही हैं, साथ में बच्चों द्वारा जान-बूझकर किये जाते हैं ।

धूम्रपान करना, लड़ना, झगड़ना, चोरी करना, माता-पिता की बात न मानना, झूठ बोलना, गन्दी एवं भद्दी भाषा का प्रयोग करना, बुरी संगति में रहना, आवारागर्दी करना, दूसरों को सताना, यौन संबंधों को लेकर आक्रामक होना, विद्यालय से भागकर कहीं घूमने या सिनेमा देखने जाना, दीवारों पर गन्दे शब्दों को लिखना, विद्यालय के संसाधनों को क्षति पहुंचाना आदि । पारिवारिक, सामाजिक, शारीरिक मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक इन पांच कारणों से सामान्यत: बच्चे आपराधिक प्रवृत्तियों वाले हो जाते हैं--

1. पारिवारिक कारण

वंशानुगत समस्याएं, टूटा परिवार, अपराधी भाई-बहन, अशिक्षित माता-पिता, परिवार का दूषित वातावरण इत्यादि पारिवारिक कारणों से बच्चे ग़लत कार्यों में लिप्त पाये जाते हैं ।

यदि माता-पिता अपराधी प्रवृत्ति वाले हों, तो बच्चे पर भी इसका कुप्रभाव पड़ सकता है । यदि परिवार का कोई सदस्य अनैतिक कार्यों में संलग्न हो, तो बच्चा भी इस प्रकार के अनैतिक कार्यों में अपनी रुचि दिखा सकता है ।

2. सामाजिक कारण

बुरा पड़ोस, विद्यालय एवं समाज की बुरी परिस्थितियां, समाज के ग़लत व्यक्तियों के साथ, टेलीविज़न, सिनेमा इत्यादि का प्रभाव इत्यादि बच्चों में अपराधी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने वाले कुछ सामाजिक कारण हैं । यदि बालक के घर के आसपास अपराधी प्रवृत्ति के लोग रहते हों, तो बच्चे पर इसका ग़लत प्रभाव पड़ सकता है । बच्चे अपने आस-पड़ोस के लोगों से जुआ खेलना, ताश खेलना, यौन-अपराध में लिप्त रहना, मार-पीट में रुचि लेना इत्यादि बुरी आदतें सीख सकते हैं ।

3. शारीरिक कारण

बालक में यदि किसी प्रकार का कोई शारीरिक दोष हो, तो अन्य बच्चों की ग़लत प्रतिक्रियाओं जैसे उसे चिढ़ाना, हीन दृष्टि से देखना इत्यादि कारणों से वह अपराध की ओर उन्मुख होता है ।

4. आर्थिक कारण

आर्थिक कारणों से भी बच्चा अपराध की ओर उन्मुख हो सकता है । यदि बालक के परिवार वाले निर्धन हों और वे उसकी आवश्यकताओं को पूरा कर पाने में असमर्थ हों,



Asif Hussain

Mob. : 9225903427
Ph : 0832-2513132

ADARSH

RESTAURANT

We Also Take Party Orders

इल्म दो तरह का होता है, एक इल्म तो वह है जो दिल में उतर जाता है, यही इल्म क़ियामत के दिन बन्दे के काम आएगा, और एक इल्म वह जो सिर्फ़ ज़ुबान तक रहता है, दिल में नहीं उतरता, यह इल्म अल्लाह की अदालत में आदमी के ख़िलाफ़ दलील और हुज्जत बनेगा। (हदीस)

Swatantra Path, Vasco-Da-Gama, Goa-403802

तो भी बच्चा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चोरी जैसे अपराध में लिप्त हो सकता है ।

5. मनोवैज्ञानिक कारण

यदि बालक का मानसिक स्वास्थ्य ठीक न हो अथवा उनकी इच्छाओं का दमन किया जाता हो, तो भी उनके मन में हीन भावना पनपने लगती है और वह शीघ्र ही अपराध की ओर उन्मुख होने लगता है । बच्चे को भी अपने परिवार एवं विद्यालय के साथियों शिक्षकों से प्रेम एवं स्नेह की आवश्यकता होती है, इसके अभाव में भी बच्चा चिड़चिड़ा हो सकता है या हिंसात्मक व्यवहार कर सकता है ।

6. रोकथाम

बालकों में बढ़ते अपराध को रोकने के लिए माता-पिता, शिक्षकों एवं मनोचिकित्सकों का सहयोग किया जाता है । माता-पिता की अपने बच्चों को सुधारने में मुख्य भूमिका होती है । उन्हें अपने बच्चे को सुधारने के लिए उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण एवं सकारात्मक व्यवहार करना चाहिए । कुछ माता-पिता अपने बच्चों को कोसते रहते हैं । माता-पिता को ऐसे कार्यों से बचना चाहिए एवं बच्चे के अनुकूल परिवार का वातावरण बनाए रखना चाहिए ।

बालकों के सुधार करने के लिए सरकार द्वारा भी प्रयास किये जाते हैं । बालकों के साथ मनोवैज्ञानिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए न्याय करने के लिए किशोर न्यायालय की व्यवस्था है । बाल अपराधियों को कारागार में नहीं भेजा जाता, बल्कि उन्हें सुधरने का मौका देने के लिए बाल सुधार गृह में भेजा जाता है । मनोचिकित्सकों द्वारा बालक अपराधियों को सुधारने में अत्यधिक सहायता मिलती है । इसमें बालकों के व्यवहार एवं उनकी मनोवृतियों का अध्ययन कर, उनके द्वारा किये जाने वाले अपराधों के कारणों का पता लगाया जाता है एवं किये जाने वाले अपराधों के कारणों का पता लगाया जाता है एवं इसके बाद उनका आवश्यक उपचार किया जाता है । इस सिलसिले में कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. विद्यालयों में विशेष प्रकार की व्यवस्था एवं कार्यक्रमों को आयोजित कर बालकों को बाल अपराधी बनने से रोका जा सकता है ।

2. विद्यालयों में संतोषजनक वातावरण स्थापित करना चाहिए ।

3. पारिवारिक वातावरण में सुधार के लिए अभिभावक को सम्मेलन बुलाकर उचित सलाह देनी चाहिए ।

4. बालकों के लिए अच्छे साहित्य उपलब्ध कराने चाहिए तथा धार्मिक उपदेश की व्यवस्था कर बालकों को नैतिक शिक्षा देनी चाहिए ।

5. महान व्यक्तियों की गाथाएं । जीवनी सुनानी चाहिए तथा बालकों को रचनात्मक कार्य करने के अवसर प्रदान करने चाहिए ।

6. बालकों के लिए स्वास्थ्य मनोरंजन की व्यवस्था होनी चाहिए ।

7. विद्यालयों में खेलकूद एवं क्रीड़ा की उचित व्यवस्था होनी चाहिए तथा नैतिक मूल्यों का निर्वाह करने वाले एवं शिक्षा में अच्छे प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरस्कार एवं प्रशंसा से सम्मानित करना चाहिए ।

अत: निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि उपरोक्त लिखित उपचारात्मक विधियों के माध्यम से बाल अपराध की समस्या का समाधान किया जा सकता है तथा बालकों के अन्दर से इस रोग को सफलतापूर्वक निकाल कर उसे एक सभ्य बालक के पंक्ति में खड़ा किया जा सकता है ।

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the society

(Q. Hoda) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ समोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अहले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं०

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

इस बार है अस्ल मुक़ाबला ! भयभीत कांग्रेस और लोकपाल

■ सुरेन्द्र चतुर्वेदी
(निदेशक सेन्टर फ़ॉर मीडिया रिसर्च एंड डेवलपमेंट)

बाबा रामदेव के हरिद्वार लौट जाने और अन्ना हज़ारे के दिल्ली आ जाने के बाद भ्रष्टाचार के ख़िलाफ़ जनता के संघर्ष को एक नया सेनापति मिल गया है । इस बार केन्द्र सरकार के सामने दुनियादारी से दूर रहने वाले बाबा रामदेव नहीं हैं । अबकी बार उसका मुक़ाबला अपने आपको दांव पर लगाने वाले अन्ना हज़ारे, अरविंद केजरीवाल, किरण बेदी जैसी हज़ारों लोगों से हैं जो न केवल राजनेताओं के अस्ली चरित्र से परिचित हैं, अपितु यह भी जानते हैं कि सरकार मीडिया और सत्ता का उपयोग कर किस तरह से समर्थकों और भारत की आम जनता को भ्रमित करने में कुशल हैं । इससे यह भी साबित होता है कि सरकार कितना भी दमन कर ले । एक के बाद एक लोग आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए सामने आते रहेंगे ।

आम जनता का विश्वास भी राजनीतिक दलों से उठ गया है, इसीलिए सामाजिक कार्यकर्ता और देश के प्रमुख संत चाहे वे बाबा रामदेव हों या श्रीरविशंकर अपने समर्थकों के साथ सड़कों पर भ्रष्टाचार के दानव से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे हैं ।

यह भी आश्चर्यजनक है कि केन्द्र सरकार इस बात के लिए तो राज़ी है कि ग्रामसेवक से लेकर संयुक्त सचिव तक के कर्मचारी और अधिकारी लोकपाल के दायरे में आएं, लेकिन वह उन लोगों को लोकपाल से दूर रखना चाहती है, जो नीति निर्माण के लिए उत्तरदायी हैं और वे ही भ्रष्टाचार के पोषक होने के लिए भी ज़िम्मेदार हैं । सरकार का यह रुख़ भारत के आम आदमी को न केवल भ्रष्ट साबित कर रहा है, अपितु यह भी कह रहा है कि भारत का आम आदमी भ्रष्ट है । भारत के नागरिकों को इससे बड़ा अपमान किसी सरकार ने नहीं किया होगा ।

इसी क्रम में आजकल सरकारी पक्ष एक नयी कहानी को हवा दे रहा है, कहा जा रहा है कि भारत के भ्रष्टाचार मुद्दा ही नहीं है, और भारत का समाज तो भ्रष्टाचार को हमेशा ही स्वीकार करता रहा है । भारत में निवास करने वाले संत महात्माओं के मठ और पीठ अवैध कमाई को संरक्षित करने का ठिकाना बन गये हैं । अत: केन्द्र सरकार का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वह भ्रष्टाचार का ठिकाना बने इन केन्द्रों को ढूंढ़-ढूंढ़कर नष्ट कर दे । यह सब बातें देश के सत्ताधारी राजनेताओं की तरफ़ से तब से कही जाने लगी है, जब से बाबा रामदेव ने भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सरकार को घेरा और विगत 4-5 जून की रात्रि को केन्द्र सरकार ने बाबा समदेव और उनके समर्थकों को मार कर नयी दिल्ली के रामलीला मैदान से भगा दिया और उस पर प्रधानमंत्री कहते हैं कि इसके अलावा और कोई चारा ही नहीं बचा था ।

ध्यान देने लायक़ बात है कि ये बातें आम जनता की नहीं है, ये बातें उन लोगों की तरफ़ से आयी हैं, जिनसे देश की जनता ने उनकी अकूत कमाई का राज पूछा है और इतना कुछ सहने के बाद भी देश की जनता यह जानना चाहती है कि गोरे अंग्रेज़ों से सत्ता प्राप्त कर लेने के बाद जिन भी नेताओं ने सत्ता का उपभोग किया है, वो भारत के नागरिकों को बुनियादी सुविधाएं दिला पाने में क्यों विफल रहे ? कैसे भारत का सर्वांगीण विकास कुछ मुट्ठी भर लोगों के विकास में क़ैद हो गया ? कैसे कुछ भ्रष्ट लोगों ने सत्ता प्रतिष्ठान पर क़ब्ज़ा करके अपनी तिजोरियों को न केवल भर लिया अपितु उसे विदेशी बैंकों में भी जमा करा दिया । तो फिर यह क्यों नहीं माना जाए कि देश आज भी आज़ादी को तरस रहा है, और अबकि बार

संग्राम गोरों से नहीं सत्ता को धंधा बना चुके लालची राजनेताओं से हैं ।

आज जब भारत का प्रत्येक राजनीतिक दल सत्ता का उपभोग कर चुका है । भारत की आम जनता इस मुद्दे पर राजनीतिक समर्थन को लेकर असमन्जस में है । आम जनता का विश्वास भी राजनीतिक दलों से उठ गया है, इसीलिए सामाजिक कार्यकर्ता और देश के प्रमुख संत चाहे वो बाबा रामदेव हो या श्रीरविशंकर अपने समर्थकों के साथ सड़कों पर भ्रष्टाचार के दानव से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे हैं परंतु राजसत्ता, भारत के सामान्य नागरिकों के इस आन्दोलन को राजनीतिक बताने का दुस्साहस कर रही है । क्या भ्रष्टाचार कुछ दलों की ही समस्या है, इसके कारण देश की आंतरिक सुरक्षा ख़तरे में नहीं पड़ गयी है ?

इस बात पर भी ध्यान देने की ज़रूरत है कि केन्द्र सरकार हर प्रकार से उन सभी लोगों को पथभ्रष्ट साबित करने की हिमाक़त कर रही है, जो लोग केन्द्र सरकार से भ्रष्टाचार पर स्पष्ट नीति बनाने की बात कर रहे हैं, और विदेशों में जमा पैसे को वापस लाने की मांग को पूरा करने की जिद पर अड़े हुए हैं । इसी के साथ सत्ता द्वारा उन प्रतीक चिन्ह पर भी लगातार आक्रमण हो रहे हैं, जिनके बारे में सरकार को यह अंदेशा है कि वो जनता के सामने आस्था का केन्द्र हैं ।

चाहे वह सत्यसाइ बाबा के निधन के बाद उनके आश्रम की संपत्ति हो या बाबा रामदेव के ट्रस्ट की संपत्ति का मामला हो या अन्ना हज़ारे की नैतिकता का प्रश्न ? सरकार का हर क़दम हर बार इस बात को सिद्ध करता है कि सरकार हर उस आदमी की आवाज़ को दबा देने की मंशा रखती है, जिस आवाज़ में सरकार से जवाब मांगने की बुलंदी हो ।

आश्चर्यजनक तो यह है कि केन्द्र सरकार जितनी दृढ़ संकल्पित इन आन्दोलनों को कुचलने के लिए दिखती है, उसका उतना दृढ़ संकल्प भ्रष्टाचार निरोध के उपाय करने में नहीं दिखता । राजनीतिक समीक्षक यह मानने लगे हैं कि सरकार लोकतंत्र को मज़बूत करने की बजाय उसका इस्तेमाल रक्षाकवच के रूप में कर रही है । यह याद रखे जाने की ज़रूरत है कि लोकतंत्र की नींव ही 'असहमति के आदर व सम्मान' पर टिकी है और जिस प्रकार से सरकार, सामाजिक कार्यकर्ताओं और संस्थाओं को अपना व्यक्तिगत दुश्मन मानने लगी है, उससे यह प्रमाणित होने लगा है कि सरकार की नीयत में खोट है और अब तो जनता का यह विश्वास और ज़्यादा गहरा हो गया है कि सरकार 'अपने संरक्षणकर्ताओं' को बचाने के लिए अपनी संवैधानिक ताक़त का ठीक उसी प्रकार से दुरुपयोग कर रही है, जैसी कि ब्रिटिश शासनकाल में महारानी विक्टोरिया के सैनिक करते थे ।

यह भी आश्चर्यजनक है कि देश ही नहीं विदेश के सभी प्रबुद्धजन आज भी प्रधानमंत्री को बेईमान नहीं मानते । हां, वे देश के वर्तमान हालातों में प्रधानमंत्री की विवेकहीनता और अनिर्णय की स्थिति से निराश ज़रूर हैं । तो ऐसी स्थिति में कांग्रेस को प्रस्तावित लोकपाल बिल से क्या आपत्ति हो सकती है ? दुर्भाग्यजनक स्थिति तो यह है कि कांग्रेस भी मनमोहन सिंह को भारत के प्रधानमंत्री की बजाय एक ऐसे सेवक के रूप में देखती है, जो सोनिया गांधी के प्रति वफ़ादार है । (वि॰फ़ी॰)

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

भूगोलशास्त्री ज़करिया बिन मुहम्मद क़ज़वीनी

■ मौलाना सिराजुद्दीन नदवी

ख़लीफ़ा हारून रशीद ने जो शहर आबाद किये उनमें से एक शहर क़ज़वीन है । बारहवीं सदी में इस शहर की मस्जिद के इमाम और धर्मोपदेशक मुहम्मद थे । मग़रिब की नमाज़ के बाद वे धर्म का उपदेश देते । मस्जिद श्रोतागणों से खचाखच भरी रहती । एक दिन उन्होंने ज़मीन-आसमान का क्षेत्रफ़ल, पृथ्वी पर पाये जाने वाले जीवधारी, ज़मीन के अन्दर छिपे हुए पदार्थों और वातावरण में फैली हुई ख़ुदा की निशानियों को पेश करते हुए ख़ुदा की महानता का वर्णन किया । उनके छोटे लड़के ज़करिया भी यह उपदेश सुन रहे थे । बाप-बेटे जब मस्जिद से घर वापस आये तो ज़करिया ने कहा–

''अब्बू जान ! आज आपके उपदेश ने मुझे झिंझोड़ कर रख दिया है । मैंने दृढ़ निश्चय किया है कि ब्रह्माण्ड में फैली हुई ख़ुदा की अज़मतों का पता लगाऊंगा ।''

पिता ने बेटे को समझाया कि यह काम बहुत मुश्किल है । दार्शनिकों, तर्कशास्त्रियों और उलमाओं में से कोई भी आज तक यह काम अंजाम न दे सका । इसके बारे में मालूम करने के लिए तुम्हें गणित, भूगोल, खगोल, अंतरिक्ष और भूगर्भशास्त्र के बारे में पूर्णतया ज्ञान प्राप्त करना होगा ।

ज़करिया बिन मुहम्मद कज़्वीनी का यह मामूल बन गया कि जब वे दिन में बकरियां चराने जाते तो बकरियों को चरागाह में छोड़कर क़ुरआन हिफ़्ज़ करने बैठ जाते । उन्होंने बहुत जल्द क़ुरआन पाक याद कर लिया । अब उन्होंने हदीसों की तरफ़ ध्यान दिया । मुअत्ता इमाम मालिक का अध्ययन प्रारंभ किया और एक वर्ष के अन्दर ही वे मुअत्ता इमाम मालिक को ज़ुबानी याद कर लिए । क़ुरआन की व्याख्या, हदीस, इस्लामी धर्मशास्त्र में महारत हासिल कर लेने के बाद ज़करिया सांसारिक ज्ञान प्राप्त करने की ओर ध्यान दिये । उन दिनों मुग़लों के हमले और अफ़वाहें बहुत तेज़ी के साथ क़ज़्वीन में फैल रही थीं । अत: ज़करिया के पिता अपने पूरे परिवार के साथ बग़दाद आ गये ।

बग़दाद पहुंचकर ज़करिया को अपनी आरज़ू पूरी होती नज़र आयी । यहां हर कला व शास्त्र के विद्वान मौजूद थे । बैतुलहिकमा में रोम, यूनान, ईरान और हिन्दुस्तान की सारी उल्लेखनीय किताबें मौजूद थीं । बग़दाद में ज़करिया ''क़ज़्वीनी'' के लक़ब से मशहूर हो गये । उन्हें इस्लामी धर्मशास्त्र और धार्मिक ज्ञान में महारथ हासिल थी, इसलिए उन्हें राज्य की ओर से (जज) का पद पेश किया गया, मगर उन्होंने यह कहकर इन्कार कर दिया कि उन्हें भूगोल, अंतरिक्ष, खगोलशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, प्राणीशास्त्र और खनिजशास्त्र इत्यादि के सिलसिले में पूरी ज़ानकारी की ज़रूरत है । वे विश्व के हर पहाड़, समुद्र, नदी और शहर के बारे में जानकारी एकत्र करना चाहते हैं । वे ज़मीन पर आबाद क़ौमों, हर प्रकार के जीव-जन्तुओं, कीड़े-मकोड़े के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं । वे ग्रहों, नक्षत्रों और उनके मार्गों का पता लगाना चाहते हैं ।

क़ज़्वीनी ने दस वर्ष घूमने-फिरने में बिता दिये । ईरान के अनेक इलाक़े ख़ुरासान, अफ़ग़ानिस्तान, तुर्की, ख़्वारिज़्म, आरमीनिया, आज़रबाईजान इत्यादि देशों की सैर की । उन्होंने हर ज़रूरी चीज़ को नोट किया । हर देश और शहर के बारे में अनेक प्रकार की जानकारियां इकट्ठा कीं ।

उन्होंने यूनानी दार्शनिक अरस्तू, बल्लेमूस आदि और इस्लामी विद्वान अलबैरूनी, इब्नुल हैसम, इब्ने सीना की किताबों का अध्ययन किया, मगर इन विषयों पर कोई ठोस जानकारी प्राप्त न हो सकी । इन किताबों से उन्हें जो थोड़ी-बहुत जानकारी मिली, उन सबको एक जगह क्रमवार जमा करना शुरू किया । वे जानकारी को लिखते समय अपनी राय व विश्लेषण ज़रूर लिखते । इस तरह उन्होंने तमाम मख़्लूक़ात के बारे में जानकारी इकट्ठा कर लीं ।

उन्होंने घूम-घूमकर दुनिया को क़रीब से देखकर अपने अनुभव के आधार पर अपने ज्ञान में वृद्धि करने के लिए देशाटन का प्रोग्राम बनाया । एक ख़च्चर पर किताबें और ज़रूरी सामान लादा और एक घोड़े की पीठ पर सवार होकर

क़ादिरी दवाख़ाना की कामयाब यूनानी दवाएं

DIAL
033-2469-3173
033-2489-3539



किसी भी प्रकार के दर्द, चोट, मोच, गठिया, जलने, कटने और बच्चों की मालिश में बहुत ही लाभदायक।



जाफ़रानी तेल®

गैस्टिक के दर्द में?

क़ब्ज़ ट्रोजन

अनपच, भूख की कमी, जिगर का दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन और पेटी की सभी बीमारियों में बहुत ही लाभदायक।



Qadri Dawakhana
B-18, NAWAB WAJID ALI SHAH ROAD, KOLKATA - 24,

DISTRIBUTORS:
DARYA BADI DAWAKHANA 393, E. R. Road, Pydhonie, Mumbai - 400 003 Ph: 022-2341-1957,
RELAX ENTERPRISES 3416, Bahishti Wada, No.1, Dhule, - 424 001 Ph: 02562-236952

ज्ञान की खोज में निकल पड़े । क़ज़्वीनी ने दस वर्ष घूमने-फिरने में बिता दिये । ईरान के अनेक इलाक़े ख़ुरासान, अफ़ग़ानिस्तान, तुर्की, ख़्वारिज़्म, आरमीनिया, आज़रबाईजान इत्यादि देशों की सैर की । उन्होंने हर ज़रूरी चीज़ को नोट किया । हर देश और शहर के बारे में अनेक प्रकार की जानकारियां इकट्ठा कीं ।

दस वर्ष के बाद क़ज़्वीनी बग़दाद वापस पहुंचे, तो उन्हें यह ख़बर मिली कि उनके पिता का देहांत हो चुका है । अब घर की आर्थिक ज़िम्मेदारियों का बोझ उनके कंधों पर था । अत: इस बार उन्होंने क़ाज़ी (जज) का पद स्वीकार कर लिया । उन्होंने शादी कर ली और शानदार भवन में सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे ।

दिन में वे राज्य व घर की ज़िम्मेदारियों को अदा करते और वे राज की तंहाई, ख़ामोश सन्नाटे में चिराग़ के सामने बैठकर घंटों लिखते रहते । अंतत: 15 साल की अवधि में उनकी अनमोल किताब "अजायबुल मख़्लूक़ात व ग़रायबुल मौजूदात" पूरी हुई, जो बहुत ही लोकप्रिय व मशहूर हुई ।

क़ज़्वीनी के कारनामों में सबसे बड़ा कारनामा 'अजायबुल मख़्लूक़ात व ग़रायबुल मौजूदात" नाम की किताब की रचना है । इस किताब ने अपनी आधुनिक मालूमात के आधार पर इतनी शोहरत प्राप्त की, जो किसी दूसरी किताब को प्राप्त न हो सकीं ।

क़ज़्वीनी से पहले यह तो पता चल चुका था कि पृथ्वी गोल है, मगर पृथ्वी किस सूरत में गोल है, यह क़ज़्वीनी की ही खोज से मालूम हुआ ।

क़ज़्वीनी ने यह भी खोज की कि पृथ्वी अपनी धूरी पर सूर्य के चारों ओर घूम रही है और उसी के द्वारा ऋतु परिवर्तन होता है ।

क़ज़्वीनी ने यह भी बताया कि चांद व पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूम रही है । उन्होंने यह भी खोज की कि ज़मीन व चांद तो सूरज के चारों ओर घूम रहे हैं, मगर सूरज भी घूम रहा है, सूरज स्थित नहीं है ।

क़ज़्वीनी ने बताया कि आसमान अपने तारों के साथ उत्तरीय भाग में जैसा दिखायी देता है, दक्षिणी भाग में उसके ठीक विपरीत दिखलायी देता है ।

क़ज़्वीनी ने बताया कि पृथ्वी के अन्दर क्या-क्या पदार्थ छिपे हुए हैं । सोना, चांदी, लोहा, सीसी, तांबा, पीतल, पारा, तेल, तारकोल । उन्होंने यह भी बताया कि बीते ज़माने के साथ यह चीज़ें किस तरह बनती और बिगड़ती हैं । उन्होंने भूकंप और ज्वालामुखी की वास्तविकता के बारे में भी बताया । उसी दौरान उन्होंने हलाकू ख़ान के आक्रमण के बारे में सुना । अत: क़ज़्वीनी दूसरे लोगों की तरह बग़दाद छोड़कर दमिश्क़ चले आये । दमिश्क़ में बहुत-सी आज़माइशों को झेलते हुए सन 1283 ई० में क़ज़्वीनी की मृत्यु हुई ।

आज भी क़ज़्वीनी की तस्वीर के साथ बहुत-सी किताबें विश्व की अनेक पुस्तकालयों में पायी जाती हैं । वाशिंगटन, पेरिस और भारत की रज़ा लाइब्रेरी रामपुर में क़ज़्वीनी की किताबें मौजूद हैं ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are — Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(Prof Z.H.Khan) Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 93 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप ख़ुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581

☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

मज़दूरों के अधिकार

● डॉ॰ एम॰ ए॰ रशीद
(नागपुर, महाराष्ट्र)

मज़दूर वर्ग में बाल मज़दूरों से लेकर सेवक, नौकर-चाकर तथा सेविकाओं का समावेश रहता है । इनके अधिकार भिन्न-भिन्न होते हैं । बाल मज़दूरों के संबंध तो उन्हें विशेष दर्जा एवं क़ानूनी अधिकार प्राप्त हैं । आश्चर्य कि भारी-भरकम देशी-विदेशी अनुदान को किसी परिणामों की प्राप्ती के घड़ियाली आंसू बहाकर प्रत्येक वर्ष यूं ही बहा दिया जाता है । बाल मज़दूरी के क़ानून भी छलावा और दिखावा, हाथी के दांत बने हुए हैं । बाल मज़दूर कन्याओं से यौनाचार द्वारा उन्हें हवस का शिकार बनाया जाता है । धन-दौलत के अभाव में ये कमज़ोर दबे पांव अपनी ज़िन्दगी कुछ इस प्रकार व्यतीत करते हैं कि उनके दैहिक शोषण पर आवाज़ तक नहीं उठ पाती, समय पर उन्हें मज़दूरी नहीं दी जाती सो अलग । दूसरी ओर मज़दूरों के अधिकारों की लगातार उपेक्षा की जाती है ।

सम्मान तथा अधिकारों के दुरुपयोग का क्रम मौजूदा स्थितियों में अब मालिक तथा मज़दूर दोनों के गले की हड्डी बनने लगा है । मालिक के हक़ और अधिकार को सेवक तथा मज़दूर वर्ग भी पूर्णत: नहीं निभा पा रहे हैं । वहां मज़दूर वर्ग मालिक के निश्चित समय को धोका और कामचोरी में बिताता है । परिणामस्वरूप उस मालिक एवं शासन का कार्य बाधित होकर दुविधाओं को जन्म देने वाला बन जाता है । इसके विपरीत मालिक तथा शासकीय अधिकारी, मजदूर वर्ग के अधिकारों का उल्लंघन भी करते हैं । मज़दूरों से सीमा से अधिक जानवरों समान अत्यधिक कार्य करवाये जाते हैं, उन पर अन्याय, शोषण और अत्याचार के पहाड़ गिराये जाते हैं । वेतन में जबरन कटौती की जाती है और कभी उनकी मज़दूरी मार ली जाती है । कभी उन पर कार्यों का इतना अधिक बोझ डाल दिया जाता है कि वे उसे अंजाम तक नहीं पहुंचा पाते, उन्हें उल्हाने दिये जाते हैं तो कभी उन्हें ललकारा भी जाता है । ऐसी परिस्थितियों का सामना तथा संघर्ष कर वे थक-हार जाते हैं, जिस कारण उनमें दासता, निर्धनता, मोहताजी एवं भिखारी-सी ज़िन्दगी सिर उठाने लगती है । फिर निर्धनता के आंकड़ों में वृद्धि देश के सामने चुनौती बन जाती है ।

ऊपर वर्णित तुलनात्मक विमोचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आज प्रेमभाव में न्यूनता ही के कारण मानवजाति में पारस्परिक अधिकारों की आपूर्ति विघ्न तथा गंभीर संकट का शिकार हो रही है । इस प्रकार यह एक ज्वलंत विषय बन गया है, लेकिन इन अधिकारों के दूरगामी एवं चिरस्थायी नैदानिक परिणामों की प्राप्ति में इस्लाम धर्म ने उसे जीवन व्यवस्था के अंतर्गत रखा है । यथा : परलोक (क़ियामत के दिन) अल्लाह के न्यायालय में सर्वप्रथम इन्हीं अधिकारों के हनन संबंधी मुक़दमे, पीड़ितों द्वारा दायर किये जाएंगे । तत्पश्चात हनन, ग़बन एवं उल्लंघन करने वालों को कठोर यातनायुक्त सज़ाओं को भुगतना पड़ेगा । आश्चर्य कि इस्लाम धर्म की ऐसी अनेकों अधिकारों संबंधी व्याख्याओं की अनदेखी कर उस पर आतंकवाद को फैलाने वाला कट्टरवादी धर्म का आरोप लगाया जाता है कि फिर भला वह कैसे न्याय करने वाला, अधिकारों का संरक्षक एवं हितैषी बन सकता है । जबकि इस प्रकार का प्रमाण पत्र देने वाले पश्चिम देशों के साथ स्वयं अमेरिका भी इन्हीं अधिकारों की आड़ में बलात् आक्रमणकारी, अत्याचारी एवं अन्यायी बनकर विश्वजगत के सामने आ खड़ा हुआ है ।

यह पूर्णत: सत्य है कि इस्लाम समस्त मानवता का प्रहरी बनकर आया है । उसने दयाभाव, न्याय, रक्षा एवं अधिकारों की अतुलनीय बातें सिखायीं, जिनकी संपूर्ण विश्वजगत मं चर्चाएं हैं । इस्लाम बुनियादी अधिकारों का ध्वजावाहक है जिन्हें वह जन्म से मृत्यु तक निभाने का आदेश देता है । विदित हो कि इस्लाम धर्म संपूर्ण जीवन व्यवस्था का नाम है । उसका आधिकारिक ग्रंथ पवित्र क़ुरआन मौलिक अधिकारों की शिक्षाओं के रूप में एक वकील की हैसियत रखता है । उसके आदेशों को अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कर भी दिखाया है । इस प्रकार हम संक्षेप में यह बताने का प्रयास करेंगे कि इस्लाम

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

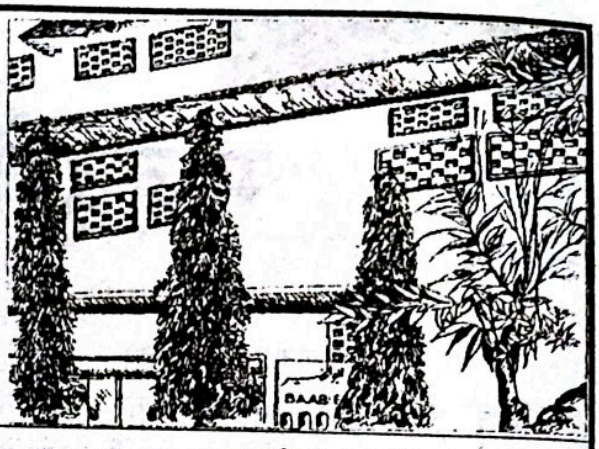

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा ● 24 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2010 ई॰ तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से ''मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

.....पता.....

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

इक़बाल अहमद ख़ां

धर्म मज़दूरों के अधिकारों के प्रति अपना दृष्टिकोण किस प्रकार निर्देषित करता है–

1. सर्वप्रथम यह कि इस्लाम में इन अधिकारों को पारस्परिक व्यवहार के अंतर्गत रखा गया है ।

2. मानवजाति अल्लाह का परिवार है, तुम में से अल्लाह को वही बंदे प्रिय हैं जो उसके परिवार के साथ उत्तम व्यवहार करें । (मिश्कात)

3. गुलामी की प्रथा साधारणत: अब यदाकदा ही देखने को मिलती है, जबकि अप्रत्यक्ष रूप में व्यक्ति ही नहीं बल्कि उसने देश तक को जकड़ लिया है । अज्ञानता के काल में इसने बड़ा अत्याचार किया था और इस्लाम ने आरंभिक काल ही से उसे समाप्त करने का आदेश दे दिया था । इस संबंध में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि गुलाम का हक़ यह है कि उसे खाना और कपड़ा दिया जाए और उस पर काम का इतना ही बोझ डाला जाए जिसको वह सहन कर सके । (मुस्लिम)

4. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि जब तुम में से कोई नौकर खाना पकाये फिर उसके पास लाए और हाल यह हो कि उसने खाना पकाने में गर्मी और धुएं की परेशानी उठायी है तो मालिक हो चाहिए कि उसे साथ बिठाकर खाना खिलाए और अगर खाना थोड़ा हो, एक निवाला या दो निवाला उसमें से उसके हाथ में रख दे । (मुस्लिम)

5. एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सेवा में आया और पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मैं नौकर को कितनी बार क्षमा किया करूं ? हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) शांत रहे । उस व्यक्ति ने फिर अपनी बात पूछी : फिर से शांत रहे । जब तीसरी बार उसने पूछा तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा प्रत्येक दिन में सत्तर बार ।

(अबू दाऊद)

6. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि अपने गुलामों और सेविकाओं से बुरा बर्ताव करने वाला स्वर्ग में नहीं जाएगा । (मिश्कात)

7. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि पूर्व इसके कि मज़दूर का पसीना सूखे, उसे उसकी मज़दूरी दे दो ।

(इब्न माजा)

8. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि श्रेष्ठ कमाई, मज़दूर की कमाई है, बशर्ते की वह अपने मालिक का काम शुभेच्छा और निष्कपटता से अंजाम दे । (अबू दाऊद)

9. हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा कि क़ियामत के दिन मेरी ओर से मुक़दमा दायर होगा :

(क) एक उस व्यक्ति पर जिसने मेरा नाम लेकर प्रतिज्ञा और इक़रार किया फिर उसको तोड़ डाला ।

(ख) वह व्यक्ति जिसने स्वतंत्र तथा शरीफ़ व्यक्ति को बेचकर उसकी राशि खा ली ।

(ग) वह व्यक्ति जिसने किसी मज़दूर को काम पर लगाया फिर उससे पूरा काम लिया, फिर उसे उसकी मज़दूरी से वंचित कर दिया । (अहमद)

HINDUSTAN TRAVELS

Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335



Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)

Address : Imlipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G.)

लिखे तो कैसे मिटाता है एरेजर ?

शैलेश होमवर्क कर रहा था कि कुछ ग़लत लिख गया । ग़लत लिखे को मिटाने के लिए उसने अपने ज्योमेट्री बॉक्स में से इरेजर लेने को हाथ मारा । मगर इरेजर तो वहां था ही नहीं, शायद स्कूल में रह गया था । शैलेश परेशान हो गया । इरेजर तो हर बच्चे के लिए अवश्यक है । बच्चे हो, ग़लत तो लिखा ही जाता है । इरेजर ही आपकी ग़लती को मिटाता है । आओ आज देखें कि इरेजर आपके लिखे को मिटाता कैसे है ।

आप ये तो जानते ही होंगे कि जिस पेंसिल से आप लिखते हो वह कैसे बनती है । नहीं पता तो हम बता देते हैं । गहरे कार्बन ग्रेफाइट को मिट्टी के साथ मिलाकर उससे लैड बनाते हैं । इस लैड को लकड़ी के एक लंबे होल्डर में फिट किया जाता है । फिर उसे आपकी पेंसिल के साइज के टुकड़ों में काट दिया जाता है । रंगीन पेंसिल बनाने के लिए ग्रेफाइट के स्थान पर रंगीन सामान प्रयोग किया जाता है ।

हां, तो बात कर रहे थे कि इरेजर पेंसिल के लिखे को मिटाता कैसे है ? बच्चो, आप जब पेंसिल से काग़ज़ पर लिखते हो तो वह कार्बन के कण छोड़ती हुई लिखती जाती है । कार्बन के ये कण लिखे हुए अक्षरों में छिपे होते हैं । यह भी कह सकते हैं कि अक्षर कार्बन के कणों से ही बने होते हैं ।

इरेजर से रगड़ने पर कार्बन के कण इरेजर की नरम और मुलायम सतह से चिपक जाते हैं । फिर वे इरेजर के कणों के साथ मिलकर काग़ज़ पर आ जाते हैं । इरेजर से मिटाने के बाद इन्हीं कणों को आपको काग़ज़ पर हाथ फेरकर हटाना पड़ता है । इस तरह पेंसिल का लिखा मिट जाता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली–6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



Abdul Wahab

Cell. : 9823158592

Impression

The mark of excellence

- Printing
- Interior
- Office Automation

10-A, Vasco Residency, Vasco-da-Gama, Goa-403802

Tel. : 0832-2511603, 3225486

Posted on 20-21 August 2011
September 2011
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.08.2011

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-1

ALTAF I. SHAH **09422388688**

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया:
"हर क़र्ज़ सदक़ा है ।"
(हदीस)

EXIDE
INDUSTRIES LIMITED



GEM BATTERY CENTRE

2, Sunflower Apartments,
Opp. St. Andrew's Church,
Vasco-da-Gama, Goa
Tel. : 0832-2511270/2519066
E-mail : gembatteries@gmail.com